

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

सूर: बकर: , आयत: 22

अनुवाद: : "ऐ लोगो! तुम अपने
रब की इबादत करो, जिसने तुम्हें
पैदा किया और उन को भी, जो
तुमसे पहले थे, ताकि तुम तक्रवा
(संयम) धरण करो।"

वर्ष- 10

अंक - 9

मूल्य

600 रुपए

वार्षिक

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرِ وَاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ



संपादक

शेख मुजाहिद

अहमद

उप संपादक

सय्यद मुहियुद्दीन

फ़रीद

अख़बार-ए-अहमदिया

रुहानी खलीफ़ा इमाम जमाअत
अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर
अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह
ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला
बिनसिहिल अज़ीज सकुशल हैं।
अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह
तआला हुज़ूर को सेहत तथा
सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण
आप पर अपना फ़जल नाज़िल
करता रहे। आमीन

28 शाबान, 1446 हिज़्री कमरी, 27 तब्लीग़ा 1404 हिज़्री शम्सी, 27 फ़रवरी 2025 ई.

अहमदियत के केंद्र (मर्कज़) में क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और
बरकतों भरा आयोजन

जब हम इंसाफ की नज़र से देखते हैं, तो पूरे सिलसिला-ए-नबुव्वत में सबसे ऊँचे दर्जे के जांबाज नबी, जीवित नबी
और अल्लाह के सबसे प्रिय नबी को केवल एक ही शख्स के रूप में पहचानते हैं—वही नबियों के सरदार, रसूलों का
फख्र, तमाम मुरसिलों का सर्ताज, जिनका नाम मुहम्मद मुस्तफा व अहमद मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।

जिनकी छत्रछाया में दस दिन चलने से वह रोशनी मिलती है, जो पहले हज़ारों वर्षों तक नहीं मिल सकती थी।

(इरशादाते आलिया सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दावा है कि मैं ही वह मसीह मौऊद और महदी माहूद हूँ जिसकी आने की भविष्यवाणी
आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने की थी, और अब कोई मसीह आसमान से नहीं आएगा, कोई महदी नहीं आएगा।
वे सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
की पहचान के तौर पर बताई थीं। आपने दुनिया को, खासकर मुसलमानों को, यह दावत दी कि आंहज़रत
सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों को देखो, उन पर गौर करो और समझो कि इसी में सआदत है,
इसी में अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों की तामील है।

अल्लाह तआला मुस्लिम उम्मत को अक्रल और विवेक दे और वे बेवजह की मुखालेफ़त से बाज़ आएँ। सोचें कि
क्या अल्लाह उनसे नहीं पूछेगा कि तुमने बिना तहक़ीक़ के मुखालेफ़त क्यों की? क्योंकि अक्सर लोग बिना
तहक़ीक़ किए सिर्फ़ मौलवियों की बातों पर विरोध करने लगते हैं। कुछ तो ग़ौर करो, अल्लाह तआला मुसलमानों को अक्रल दे।

अल्लाह की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने के लिए हमें वही कोशिश करनी चाहिए, जिसका हमसे तक्राज़ा किया
गया है और जो उसका हक़ है। हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने के लिए हर
कुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए। अल्लाह की तौहीद को क़ायम करने के लिए हर समय हर कुर्बानी के लिए तैयार
रहें और तब तक चैन से न बैठें जब तक इस मक़सद को पूरा न कर लें, जिसके लिए हम हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हुए हैं।

अल्लाह तआला क़ादियान में जलसे में शामिल होने वाले हर शख्स को अपनी हिफ़ाज़त और अमान में रखे। उन्हें
हक़ीक़ी इस्लामी तालीम पर अमल करने और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इश्क़ और मोहब्बत का
इज़हार करने की तौफ़ीक़ दे। वे अपनी बैअत का हक़ अदा करने वाले बनें और उन तमाम बरकतों को लेकर लौटें,

जिनके लिए वे इस जलसे में शामिल हुए हैं।

अहमदियत के केंद्र क़ादियान दारुलअमान में 129वें जलसा सालाना का सफल और बरकतों भरा आयोजन

शेष पृष्ठ 07 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

"एक औरत को, जिस पर हत्या का आरोप नहीं है, कैद करके ठंडे लम्हों में क़त्ल करना और फिर क़त्ल भी उस तरीके से करना जो इस रिवायत में बयान किया गया है, यह तो एक बहुत दूर की बात है। इस्लाम तो ऐन जंग के मैदान में भी औरत के क़त्ल को सख़्ती से रोकता है

(सीरत ख़ातमन नबि़य्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

सवाल यह है कि जब सहाबा ने उम्मे क़िर्फ़ा से ज़्यादा ख़ूनी दुश्मनों और फिर मर्द दुश्मनों को भी कभी इस तरह क़त्ल नहीं किया, तो यह ख़याल करना कि ज़ैद बिन हारिसा जैसे वाक़िफ़कार सहाबी की कमान में एक बूढ़ी औरत के साथ यह सुलूक किया गया होगा, हरगिज़ क़ाबिले तस्लीम नहीं हो सकता।

इस बात में हरगिज़ कोई शक नहीं रह जाता कि उम्मे क़िर्फ़ा के "ज़ालिमाना क़त्ल" की घटना एक बिल्कुल झूठी और बेबुनियाद कहानी है, जो किसी छुपे हुए दुश्मन-ए-इस्लाम और मुनाफ़िक़ की मेहरबानी से कुछ तारीखी रिवायतों में जगह पा गई है। और हक़ीक़त यह है कि इस सरिय्या की हक़ीक़त इससे बढ़कर और कुछ नहीं जो मुस्लिम और अबू दाऊद ने वर्णन की है।

इस्लाम के बारे में हमें यह एतराफ़ है कि वह इन झूठे जज़्बात का मज़हब नहीं है। वह मुजरिम को मुजरिम करार देता है और उसकी सज़ा को मुल्क और सोसाइटी के लिए रहमत समझता है। वह एक सड़े हुए अंग को जिस्म से काट देने की तालीम देता है और इस बात का इज़हार नहीं करता कि एक सड़ा-गला अंग अच्छे और तंदुरुस्त अंगों को ख़राब कर दे। ग़ज़वा बनू फ़ज़ारा और ग़ज़वा अब्दुल्लाह बिन अतीक़, साथ ही मदीना में फ़साद फैलाने वाले यहूदी अबू राफ़े के क़त्ल के हालात व वाक़यात का तफ़्सीली बयान।"

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ . بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ . الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ . الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ . مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ . إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ .
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ . صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ . غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने के सराया और ग़ज़वात का ज़िक्र पिछले ख़ुत्बे से पहले चल रहा था। इसमें बनू फ़ज़ारा के सरिया का ज़िक्र हुआ था। तारीख में बनू फ़ज़ारा के ख़िलाफ़ सरिया में एक वाक़या का ज़िक्र मिलता है, जो उम्मे क़िर्फ़ा के क़त्ल का है। कुछ इतिहासकारों ने इसे जिस तरह लिखा है, वह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हक़ीक़त के ख़िलाफ़ वाक़या है।

जब सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपने वाक़ये की ख़बर सुनी, तो आपने हमला करने वालों की तरफ़ भेजा। ये लोग, जो मुसलमान थे, दिन में छुपते और रात में चलते, लेकिन बनू बद्र को उनकी ख़बर हो गई। फिर हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी सुबह के वक़्त उन लोगों के पास पहुँचे, "अल्लाहु अकबर" का नारा बुलंद किया और जो वहाँ मौजूद थे उन्हें घेर लिया। उम्मे क़िर्फ़ा, जिनका असली नाम फ़ातेमा बिनते रबीआ बिन बद्र था, और उनकी बेटी जारीया बिनत मालिक बिन हुदैफ़ा बिन बद्र को गिरफ़्तार कर लिया गया। जारीया को हज़रत सलमा बिन अक़वा ने गिरफ़्तार किया और रसूलुल्लाह नबि़य्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हिबा कर दिया। इसके बाद आपने उन्हें हज़न बिन अबी वहब को हिबा कर दिया।

इस बारे में तारीख की कुछ किताबों में उम्मे क़िर्फ़ा के क़त्ल का वाक़या जिस तरह वर्णन किया गया है, जैसा कि मैंने कहा, वह इस्लामी तालीम और अमल की रोशनी में मानना मुमकिन नहीं।

बहरहाल, कुछ किताबों में लिखा है कि क़ैस बिन मुहस्सिर ने उम्मे क़िर्फ़ा का क़त्ल किया। वह एक बूढ़ी औरत थीं। क़ैस ने उन्हें निहायत सख़्ती से क़त्ल किया। उनके दोनों पाँवों को रस्सी से बांधकर दो ऊँटों के साथ बांधा गया, फिर ऊँटों को दौड़ाया गया जिससे उनका जिस्म दो टुकड़ों में चिर गया। क़ैस ने दो और आदमियों

को भी क़त्ल किया। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी इस मुहिम से वापस आए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दरवाज़ा खटखटाया। आप नबि़य्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपना कपड़ा खींचते हुए ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्होकी तरफ़ उठ खड़े हुए, यहाँ तक कि उन्हें गले लगा लिया और चूमा और हाल पूछा। तब ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्होने आपको वह ख़बर दी जो अल्लाह ने उन्हें फ़तेह के रूप में अता की थी।

(अल्-तबक़ातुल् कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 69, दारुल-कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

(किताब अल्-मगाज़ी, वाक़िदी, भाग 2, पृष्ठ 61, दारुल-कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

इस वाक़ये को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने बड़े दलील के साथ और बेहतर तरीके से बयान किया है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि "सरिया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की जगह जिसका ज़िक्र" अभी किया गया है "... इब्र साद ने एक ऐसे सरिया का ज़िक्र किया है जिसमें ज़ैद बिन हारिसा अमीर थे। यानी इब्र साद इस सरिया में हज़रत अबू बकर की जगह ज़ैद बिन हारिसा को अमीर बताते हैं और तफ़्सीलात में भी कुछ अंतर के साथ लिखते हैं कि यह मुहिम बनू फ़ज़ारा के ख़िलाफ़ थी जो वादी अल-कुरा के पास आबाद थे और जिन्होंने मुसलमानों के एक तितारती क़ाफ़िले पर हमला कर उसका सारा माल लूट लिया था। इस मुफ़सिद गिरोह की सरगाना एक बूढ़ी औरत थी, जिसका नाम उम्मे क़िर्फ़ा था, जो इस्लाम की सख़्त दुश्मन थी। जब यह औरत इस लड़ाई में पकड़ी गई तो ज़ैद की पार्टी के एक शख्स क़ैस नामी ने इस औरत को क़त्ल कर दिया।

इब्र साद इस क़त्ल का क़िस्सा इस तरह बयान करते हैं कि उसके दोनों पाँव दो मुख़लिफ़ ऊँटों के साथ बांधे गए और फिर उन ऊँटों को मुख़लिफ़ दिशाओं में दौड़ाया गया, जिसके नतीजे में वह औरत बीच में से चिर गई और उसके बाद इस बूढ़ी औरत की बेटी सलमा बिन अक़वा के सुपुर्द कर दी गई। यही क़िस्सा किसी हद तक मुख़त्सर और मुख़लिफ़ अंदाज़ में इब्र इस्हाक़ ने भी बयान किया है।

इस रिवायत की बुनियाद पर सर विलियम म्यूर, जो एक ओरिण्टलिस्ट हैं और दूसरे यूरोपीय इतिहासकारों की तुलना में अधिक विस्तार देने के आदी हैं, ने इस वाक़ये को मुसलमानों की "वहशियाना रुह" (बर्बरता) की मिसाल के तौर पर अपनी किताब में बड़े शौक़ से शामिल किया है। बल्कि सर विलियम म्यूर ने इसे

अपनी किताब में शामिल करने की वजह ही यह लिखी है कि इस मुहिम में मुसलमान एक ज़ालिमाना अमल के मुर्तक़िब हुए थे।

इसलिए, म्यूर साहब लिखते हैं

"इस साल मुसलमानों को बहुत सी मुहिमों में मदीना से निकलना पड़ा, परंतु ये सब क़ाबिले-ज़िक्र नहीं हैं, जबकि" वे कहते हैं कि "मैं इनमें से एक मुहिम का ज़िक्र किए बिना नहीं रह सकता, क्योंकि इसका अंजाम मुसलमानों की तरफ़ से एक निहायत ज़ालिमाना अमल पर हुआ था।"

इसका तजज़िया करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि जो इतिहासकार एक वाक़ये को दूसरे वाक़यात पर सिर्फ़ इस वजह से तर्ज़ीह देता है कि उसमें किसी क़ौम के जुल्म-ओ-सितम का सबूत मिलता है, वह हक़ीक़त में एक ग़ैर-जानिबदार (निष्पक्ष) मोहर्क़ नहीं कहलाने का हक़दार है।"

उन्होंने खुद लिखा है कि बाक़ी वाक़यात को छोड़ते हैं, सिर्फ़ यही वाक़या लेते हैं। इसका मतलब है कि वह जानिबदार (पक्षपाती) थे, निष्पक्ष शोध करने वाले नहीं। "क्योंकि ऐसे शख्स से यह तवक्को (उम्मीद) नहीं की जा सकती कि वह यह जांचने की ज़रूरत समझेगा कि यह जुल्म-ओ-सितम का वाक़या कोई अस्लीयत भी रखता है या नहीं, क्योंकि ऐसा करने से उसकी दलील हाथ से निकल जाएगी।"

बहरहाल, म्यूर साहब ने इस वाक़ये को बड़े शौक़ से अपनी किताब में शामिल किया, मगर जैसा कि मैं अभी साबित करूंगा, यह साबित हो जाएगा कि यह वाक़या बिल्कुल ग़लत और बेबुनियाद है, और नकल व अक्ल दोनों ही इसे बनावटी साबित करते हैं

बुद्धिमानी से देखने पर यह साफ़ मालूम होता है कि एक औरत, जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम नहीं है, उसे क़ैद कर ठंडे लम्हों में क़त्ल करना और फिर वह भी इस तरह, जैसा कि इस रिवायत में बयान किया गया है, यह तो बहुत दूर की बात है। इस्लाम तो ऐन जंग के मैदान में भी औरत के क़त्ल को सख्ती से रोकता है।"

इस बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कई बार स्पष्ट रूप से यह फ़रमाया कि महिलाओं को क़त्ल नहीं किया जाना चाहिए। "...हदीस में आता है कि एक अवसर पर युद्ध के मैदान में किसी दुश्मन क़बीले की एक महिला मरी हुई पाई गई। बावजूद इसके कि यह नहीं पता था कि उसे किसने और किन परिस्थितियों में मारा, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इसे देखकर बहुत नाराज़ हुए और सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) को सख्ती से ताकीद की कि भविष्य में ऐसा न हो।" किसी महिला की हत्या नहीं की जानी चाहिए। "...इसी तरह, जब भी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोई सैन्य दल भेजते, तो अन्य हिदायतों के साथ-साथ यह भी ताकीद करते कि किसी महिला और बच्चे को क़त्ल न किया जाए।

इन बुनियादी निर्देशों के होते हुए, यह मान लेना कि सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा), विशेष रूप से हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ियल्लाहु अन्हु), जो कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बहुत करीबी थे, किसी महिला को उस तरह क़त्ल कर सकते थे जैसा कि इब्र साद ने लिखा है, यह हरगिज़ स्वीकार्य नहीं हो सकता। हालांकि इस रिवायत में क़त्ल का काम हज़रत ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ओर नहीं, बल्कि एक अन्य मुस्लिम व्यक्ति की ओर मंसूब किया गया है, लेकिन चूंकि यह घटना हज़रत ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की कमान में हुई, इसलिए इसकी अंतिम ज़िम्मेदारी भी उन्हीं पर आती है। यह मानना कि उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षा को जानते हुए इस तरह की क्रूरता की इजाज़त दी होगी, हरगिज़ मुमकिन नहीं।

बेशक, अगर कोई महिला किसी अपराध की दोषी होती है, तो उसे सज़ा मिल सकती है। किसी भी धर्म की शरीयत या किसी देश के क़ानून ने महिलाओं को अपराध की सज़ा से मुक्त नहीं किया। अक्सर यह देखा जाता है कि अपराध में संलिप्त महिलाओं को भी फांसी की सज़ा दी जाती है। लेकिन सिर्फ़ धार्मिक शलुता के कारण, या युद्ध में भाग लेने के कारण किसी महिला को क़त्ल करना, और वह भी उस तरीके से, जैसा कि इस रिवायत में बताया गया है, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हिदायतों और संपूर्ण इस्लामी इतिहास के खिलाफ़ है।

अगर यह कहा जाए कि यह महिला अपराधी थी और कुछ रिवायतों के अनुसार उसने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के क़त्ल की योजना बनाई थी, तो इस आधार पर उसकी सज़ा जायज़ हो सकती थी। लेकिन सवाल यह है कि जब सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने इससे अधिक खूँखार और शक्तिशाली

दुश्मनों को भी इतनी क्रूरता से नहीं मारा, तो यह कैसे संभव हो सकता है कि हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की कमान में एक बूढ़ी महिला के साथ ऐसा किया गया हो?

इसलिए, इस घटना का झूठा और मनगढ़ंत होना स्पष्ट है, और कोई निष्पक्ष व्यक्ति इसमें संदेह नहीं कर सकता।

अब अगर इसे ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर देखा जाए, तो सबसे पहली बात यह है कि इब्र साद या इब्र इसहाक़ ने इस रिवायत की कोई प्रमाणिक सनद पेश नहीं की। बिना किसी विश्वसनीय प्रमाण के ऐसी कहानी, जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की स्पष्ट हिदायतों और सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की आम परंपरा के खिलाफ़ हो, उसे हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जा सकता। दूसरी बात यह है कि यह घटना इस्लामी हदीस की सबसे प्रमाणिक किताबों सहीह मुस्लिम और सुन्नन अबू दाऊद में भी वर्णित है, लेकिन इनमें उम्मे क़िरफ़ा की हत्या का कोई ज़िक्र नहीं मिलता। कुछ अन्य विवरणों में भी ये रिवायतें इब्र साद की कथा से भिन्न हैं।

सहीह मुस्लिम और सुन्नन अबू दाऊद की हदीसों सामान्य ऐतिहासिक रिवायतों की तुलना में अधिक प्रमाणिक और विश्वसनीय होती हैं। इसलिए, जब सहीह मुस्लिम और सुन्नन अबू दाऊद में इस घटना का उल्लेख कुछ और रूप में किया गया है, तो इब्र साद आदि की रिवायतों की कोई अहमियत नहीं रह जाती। यह फर्क और भी स्पष्ट हो जाता है जब हम देखते हैं कि इब्र साद और इब्र इसहाक़ ने इस घटना को बिना किसी प्रमाणिक स्रोत के प्रस्तुत किया, जबकि इमाम मुस्लिम और अबू दाऊद ने अपनी रिवायतों को पूरी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया।

सहीह मुस्लिम और सुन्नन अबू दाऊद में इस घटना को इस तरह बताया गया है कि इसमें उम्मे क़िरफ़ा के क़त्ल का कोई उल्लेख नहीं है। हां, मुस्लिम और अबू दाऊद की रिवायत में उम्मे क़िरफ़ा का नाम नहीं है और सेना के अमीर का नाम ज़ैद के बजाय अबू बक्र बताया गया है, लेकिन इसके कारण इस पर संदेह नहीं किया जा सकता कि यह कोई और घटना थी।

इसके कुछ स्पष्ट प्रमाण हैं:

दोनों रिवायतों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह सैन्य अभियान बनू फ़ज़ारा क़बीले के खिलाफ़ था

दोनों में यह उल्लेख मिलता है कि इस क़बीले की नेता एक बूढ़ी महिला थी। दोनों में यह दर्ज है कि उस महिला को क़ैद कर लिया गया था।

दोनों में इस महिला की एक बेटी का भी ज़िक्र है, जिसे उसकी माँ के साथ क़ैद किया गया था।

दोनों में दर्ज है कि यह लड़की हज़रत सलमा बिन अक़वा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के हिस्से में आई थी

इन महत्वपूर्ण और बुनियादी समानताओं को देखते हुए यह संदेह करना कि ये दो अलग-अलग घटनाएँ थीं, उचित नहीं होगा।

हम सिर्फ़ इस तार्किक निष्कर्ष पर ही नहीं रुकते, बल्कि पुराने इस्लामी इतिहासकारों ने भी स्पष्ट रूप से लिखा है कि सहीह मुस्लिम और सुन्नन अबू दाऊद में वर्णित घटना वही है, जिसे इब्र साद ने ग़लत तरीके से प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध इस्लामी विद्वानों इमाम ज़रक़ानी, इमाम सुहैली, और अल्लामा हलबी ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि यह वही घटना है जिसे इब्र साद और इब्र इसहाक़ ने ग़लत तरीके से बयान किया है।

इससे भी बढ़कर, इमाम तबरी ने इन दोनों रिवायतों को एक साथ रखकर यह स्पष्ट किया है कि ये दोनों एक ही घटना का उल्लेख कर रही हैं।

अतः यह बात बिल्कुल निश्चित है कि मुस्लिम और अबू दाऊद की सलमा बिन अक़वा वाली रिवायत में वही घटना बयान की गई है जिसे इब्र साद और इब्र हिशाम ने उम्मे क़िरफ़ा के सरिया के नाम से ग़लत तरीके से दर्ज किया है। और चूंकि सहीह हदीसों की किताबों में बयान की गई रिवायतें सनद (प्रामाणिक श्रृंखला) के साथ आई हैं और एक वास्तविक घटनाक्रम के भागीदार (प्रत्यक्षदर्शी) की जुबान से बयान की गई हैं, इसलिए यह इब्र साद और इब्र हिशाम की ग़ैर-प्रामाणिक रिवायतों की तुलना में अधिक विश्वसनीय और प्राथमिकता योग्य हैं। अतः इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि उम्मे क़िरफ़ा की "निर्दयतापूर्ण हत्या" का वाक़या एक पूरी तरह झूठा और मनगढ़ंत किस्सा है, जिसे किसी छिपे हुए इस्लाम विरोधी या मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) की साज़िश के तहत कुछ ऐतिहासिक कथाओं में शामिल कर दिया गया। और हक़ीक़त यह है कि इस सरिया (सैन्य अभियान) की वास्तविकता वही है जो मुस्लिम और अबू दाऊद ने बयान की है।

इतिहास में किसी झूठी घटना का दर्ज हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि इस तरह की मिसालें हर देश और हर क़ौम की इतिहास में मिलती हैं। लेकिन यह अवश्य ही हैरान करने वाली बात है कि सर विलियम जैसा व्यक्ति इस झूठे वाक्ये को बिना किसी जांच-पड़ताल के अपनी किताब में शामिल कर ले और यह खुलकर स्वीकार करे कि इस घटना को शामिल करने का एकमात्र कारण यह है कि इससे मुसलमानों के किसी कथित "अत्याचारी कृत्य" का उदाहरण मिलता है।

(संदर्भ: "सीरत ख़ातमन नबि्यूनीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. (पृष्ठ 717-721)

तो असल में यह घटना ही ग़लत है और इस तरह घटी ही नहीं।

अबू राफ़े से संबंधित एक सरिया अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ि. का भी आता है, जिसे इतिहास में दर्ज किया गया है। इब्र साद के अनुसार, यह सरिया रमज़ान 6 हिजरी में हुआ।

(संदर्भ: "तबक़ात अल्-कुबरा", भाग 2, पृष्ठ 70, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने विभिन्न ऐतिहासिक पुस्तकों से ली गई अपनी खोज में लिखा है कि:

"अबू राफ़े की हत्या के समय के बारे में विभिन्न मतभेद हैं। बुखारी ने इमाम जुहरी के अनुसरण में इसे बिना किसी निश्चित तारीख़ के काब बिन अशरफ़ की हत्या के बाद बताया है, जो हर हाल में सही है और संभवतः दोनों घटनाओं को एक साथ इस कारण से रखा गया है कि उनकी प्रकृति एक जैसी थी।"

तबरी ने इसे 3 हिजरी में काब बिन अशरफ़ की घटना के बाद रखा है। वाकिदी ने इसे 4 हिजरी में बताया है। इब्र हिशाम ने इसे इब्र इस्हाक़ की रिवायत के अनुसार ग़ज़वा बनू कुरैज़ा के बाद रखा है, जो 5 हिजरी के अंत में हुआ था, जिससे इसे 6 हिजरी का प्रारंभ माना जा सकता है। लेकिन इब्र साद ने स्पष्ट रूप से इसे 6 हिजरी में बताया है और अधिकांश इतिहासकारों ने इब्र साद का अनुसरण किया है। (वाल्लाहु आलम)

(संदर्भ: "सीरत ख़ातमन नबि्यूनीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम", हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 726)

इब्र इस्हाक़ ने बयान किया है कि जब ग़ज़वा खंदक और बनू कुरैज़ा की घटना समाप्त हुई और सलाम बिन अबू हुक़ैक यानी अबू राफ़े उन लोगों में शामिल था जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खिलाफ़ सेना इकट्ठा की थी, तो क़बीला औस के लोगों ने काब बिन अशरफ़ यहूदी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुश्मनी और विद्रोह के कारण पहले ही क़त्ल कर दिया था। इसके बाद क़बीला ख़जरज ने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सलाम बिन अबू हुक़ैक (अबू राफ़े) को क़त्ल करने की अनुमति मांगी।

इस समय वह ख़ैबर में था, और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें अनुमति दे दी। यह दोनों क़बीले यानी औस और ख़जरज आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ दो मज़बूत ऊंटों की तरह प्रतिस्पर्धा करते थे।

जब औस क़बीला ने काब बिन अशरफ़ को क़त्ल किया तो ख़जरज क़बीला यह सोचने लगा कि यह लोग इस काम की वजह से इस्लाम में हमसे अधिक दर्जा न पा जाएं। इसलिए वे भी ऐसा कोई काम करना चाहते थे जिससे उन्हें भी बराबरी का दर्जा मिले। उन्होंने आपस में सोचा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खिलाफ़ दुश्मनी में काब बिन अशरफ़ के बराबर कौन हो सकता है? तब उन्हें अबू राफ़े का नाम याद आया, जो ख़ैबर या हिजाज़ की ज़मीन में था।

इब्र साद लिखते हैं कि ख़जरज क़बीला ने कहा:

"अबू राफ़े बिन अबू हुक़ैक ने रातफ़ान क़बीले और अन्य अरबों को इकट्ठा किया और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लड़ने के लिए उकसाया और उनके लिए बड़ा इनाम रखा।"

इसके बाद ख़जरज क़बीले ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अबू राफ़े के क़त्ल की अनुमति मांगी, और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अनुमति दे दी।

इसके लिए ख़जरज क़बीले के बनू सलमा के पांच व्यक्ति चुने गए:

अब्दुल्लाह बिन अतीक मसऊद बिन सिनान अब्दुल्लाह बिन उनैस जिहनी (जो अंसार के सहयोगी थे) अबू कतादा हारिस बिन रिबई ख़ुज़ाई बिन अस्वद

इमाम बुखारी की एक अन्य रिवायत में अब्दुल्लाह बिन उक्रबा का भी उल्लेख किया गया है, जिससे यह संख्या छह हो गई।

इसके अलावा इब्र अुक़बा और सुहैली ने असअद बिन हराम का भी उल्लेख किया है, जिससे यह संख्या सात हो गई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अतीक को इस अभियान का अमीर (नेता) नियुक्त किया और उन्हें सख़्ती से यह आदेश दिया कि वे महिलाओं और बच्चों को क़त्ल न करें।

(संदर्भ: "सबलुल्-हुदा वल्-रिशाद", भाग 6, पृष्ठ 102, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

तो यहां भी बहुत स्पष्ट रूप से हुक्म दिया गया कि किसी औरतको क़त्ल नहीं करना।

सहीह बुखारी में अबू राफ़े की हत्या की विस्तृत घटना इस प्रकार बयान हुई है...

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान किया है कि अबू राफ़े रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को बहुत तकलीफ़ दिया करता था और आपके खिलाफ़ दुश्मनों की मदद करता था। वह अपने किले में रहता था जो हिजाज़ की ज़मीन में था। जब वे लोग उसके करीब पहुँचे तो सूरज डूब चुका था और लोग अपने जानवरों के रेवड़ लेकर वापस हो चुके थे। अब्दुल्लाह बिन अतीक ने अपने साथियों से कहा, 'तुम अपनी जगह पर बैठे रहो, मैं जाता हूँ और दरबान से कोई उपाय करता हूँ ताकि मैं अंदर जा सकूँ।'

वे गए और दरवाज़े के करीब पहुँच गए। फिर अपने आपको कपड़े में लपेट लिया जैसे कि वे शौच कर रहे हों। जब सब लोग अंदर चले गए तो एक रिवायत में आता है कि अब्दुल्लाह बिन अतीक ने कहा, 'मैं कोई बहाना ढूँढ रहा था ताकि किले में दाखिल हो सकूँ।' इसी दौरान किले वालों ने अपना एक गधा गुम पाया और कहा कि वह रोशनी लेकर उसकी तलाश में निकलें। वे कहते हैं, 'मुझे डर हुआ कि कहीं वे मुझे पहचान न लें, इसलिए मैंने अपना सिर ढँक लिया और ऐसे बैठ गया जैसे शौच कर रहा हूँ।'

बुखारी की रिवायत है कि दरबान ने आवाज़ दी, 'ऐ अल्लाह के बंदे! अगर तुम अंदर आना चाहते हो तो आ जाओ, मैं दरवाज़ा बंद करने वाला हूँ।' मैं अंदर चला गया और छिप गया। एक दूसरी रिवायत में आता है कि वे गधों के बाड़े में जाकर दरवाज़े के पास छिप गए। जब लोग अंदर आ गए तो दरबान ने दरवाज़ा बंद कर दिया और चाबियाँ एक कील पर टांग दीं। वे कहते हैं, 'मैं उठा और चाबियाँ लेकर दरवाज़ा खोल दिया।'

एक रिवायत में है कि जब आवाज़ें थम गईं और कोई हलचल नहीं सुनी तो मैं बाहर निकला। मैंने दरबान को देख लिया था कि उसने कहाँ पर चाबी रखी थी। बुखारी की यह भी रिवायत है कि लोग अबू राफ़े के पास रात को बातें किया करते थे और वह अपनी मज्लिस लगाता था। वह अपने ऊपरी कमरे में था। जब बातचीत करने वाले चले गए तो मैं देखता रहा कि मज्लिस चल रही थी। एक रिवायत में है कि लोगों ने अबू राफ़े के साथ रात का खाना खाया और देर रात तक बातें कीं। जब सब लोग चले गए तो मैं उसके पास गया और हर दरवाज़ा जिसे खोलता, उसे अंदर से बंद कर देता था।

मैंने सोचा, 'अगर लोग मेरी आहट भी पा लें, तो जब तक मैं उसे मार न लूँ, वे मुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे।' जब मैं उसके पास पहुँचा तो देखा कि वह अपने परिवार के बीच एक अंधेरे कमरे में लेटा हुआ था। मुझे नहीं पता चला कि वह कहाँ पर है। मैंने आवाज़ दी, 'ऐ अबू राफ़े!' उसने पूछा, 'कौन है?' मैं उसकी आवाज़ की तरफ बढ़ा और अंदाज़ा लगाकर तलवार से वार किया, लेकिन वह सही से वार नहीं लगा और वह चिल्ला पड़ा। फिर मैं बाहर निकल गया और कुछ देर ठहरकर दोबारा अंदर गया जैसे कि उसकी मदद करने आया हूँ।

मैंने आवाज़ बदली और पूछा, 'अबू राफ़े, यह क्या आवाज़ थी?' उसने कहा, 'तेरी माँ हलाक हो! कोई आदमी कमरे में आया था और मुझ पर तलवार से वार किया।' अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं, 'मैंने फिर उस पर तलवार चलाई और इस बार वह लहलुहान हो गया, लेकिन वह मरा नहीं।' फिर मैंने तलवार की नोक उसके पेट में रखी और दबा दिया, यहाँ तक कि वह उसकी पीठ तक पहुँच गई।

एक दूसरी रिवायत में आता है कि फिर मैंने दोबारा वार किया, लेकिन वह फिर भी खत्म नहीं हुआ। वह चिल्लाया और उसके घरवाले जाग गए। मैंने आवाज़ बदली और फिर मददगार बनकर पहुँचा। जब देखा कि वह अपनी पीठ के बल पड़ा है, तो मैंने तलवार उसके पेट में गाड़ दी और तब तक झुका रहा जब तक कि हड्डी टूटने की आवाज़ न सुनी।

फिर मैंने दरवाज़े एक-एक करके खोले और जब आखिरी सीढ़ी तक पहुँचा तो समझा कि ज़मीन पर आ गया हूँ, लेकिन मैं गिर पड़ा और मेरी पिंडली टूट गई। एक दूसरी रिवायत में है कि मेरे पैर का जोड़ निकल गया। मैंने उसे अपनी पगड़ी से बाँधा और दरवाज़े पर जाकर बैठ गया और सोचा कि जब तक यह न जान लूँ कि वह मर

गया है, तब तक बाहर नहीं निकलूँगा।

जब मुर्गे ने बांग दी और सुबह का उजाला हुआ, तो मौत की खबर देने वाला किले की दीवार पर खड़ा हुआ और बोला, 'हिजाज़ के व्यापारी की मौत की खबर देता हूँ।'

मैं अपने साथियों की तरफ लौटा और कहा, 'खुशखबरी! अल्लाह ने अबू राफ़े को मार डाला।' फिर मैं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास पहुँचा और उन्हें बताया। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, 'अपना पाँव आगे करो।' मैंने पाँव आगे किया, आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस पर हाथ फेरा और मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे कभी कोई तकलीफ हुई ही नहीं थी।'

एक दूसरी रिवायत में आता है कि अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं, 'मैं लड़खड़ाता हुआ अपने साथियों के पास पहुँचा और कहा, 'जाओ और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को खुशखबरी दो, क्योंकि मैं तब तक नहीं जा सकता जब तक कि मौत की खबर देने वाले की आवाज़ न सुन लूँ।' जब सुबह हुई तो वह ऊँचाई पर चढ़कर बोला, 'अबू राफ़े की मौत की खबर देता हूँ।'

अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं, 'जब मैंने यह सुना तो उठकर चलने लगा, लेकिन मुझे कोई तकलीफ महसूस नहीं हुई। मैं अपने साथियों से पहले ही मिल गया, इससे पहले कि वे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास पहुँचते।' एक रिवायत में यह भी आता है कि उनकी तकलीफ पहले ही दूर हो गई थी, बस मोच आई थी।'

(सही बुखारी किताब अल-मराज़ी बाब क़त्ल अबू राफ़े हदीस 4039, 4040)

यह घटना इमाम बुखारी ने हज़रत बराअ बिन आज़िब से रिवायत की है और इसमें यह बयान है कि अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो ने अकेले अबू राफ़े का क़त्ल किया। लेकिन इब्र उक्रबा, इब्र इस्हाक़, मुहम्मद बिन उमर और इब्र साद वगैरह ने बयान किया है कि अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ सभी साथियों ने मिलकर उसे क़त्ल किया था।

(सबलुल हुदा वल् रिशाद, भाग 6, पृष्ठ 104-105, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरुत)

इसका विश्लेषण हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी किया है और इसे इस तरह बयान किया है:

"उन यहूदी सरदारों की षड्यंत्रकारी साज़िशों और भड़काने की वजह से 5 हिजरी के आख़िर में मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़ज़वा-ए-अहज़ाब (ख़ंदक की जंग) का खतरनाक फ़ितना पैदा हुआ था। उन सरदारों में से हुयय बिन अख़्तब तो बनू कुरैज़ा के साथ अपने अंजाम तक पहुँच चुका था, लेकिन सलाम बिन अबी अल-हुक़ैक़, जिसे अबू राफ़े के नाम से जाना जाता था, वह अब भी खैबर के इलाक़े में आज़ाद घूम रहा था और अपनी शरारतों में मशगूल था। बल्कि अहज़ाब की ज़लील शिकस्त और बनू कुरैज़ा के अंजाम ने उसकी दुश्मनी को और बढ़ा दिया था।"

"चूँकि ग़तफ़ान क़बीलों का इलाक़ा खैबर के करीब था और खैबर के यहूदी व नज्द के क़बीले एक-दूसरे के पड़ोसी थे, इसलिए अबू राफ़े, जो एक बड़ा व्यापारी और अमीर इंसान था, अब नज्द के जंगजू क़बीलों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काने का सिलसिला शुरू कर चुका था। वह दुश्मनी में काब बिन अशरफ़ की तरह ही था। इतिहास से साबित होता है कि शाबान महीने में जब बनू साद क़बीले की तरफ़ से मुसलमानों को ख़तरा पैदा हुआ था और उसका सामना करने के लिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी मदीना से रवाना की गई थी, तो इसके पीछे भी खैबर के यहूदियों का ही हाथ था, जो अबू राफ़े की साज़िशों का हिस्सा था।"

"लेकिन अबू राफ़े यहाँ तक ही नहीं रुका। उसकी दुश्मनी की आग मुसलमानों के खून की प्यासी थी और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वजूद उसकी आँखों में कांटे की तरह खटक रहा था। आख़िरकार उसने वही रणनीति अपनाई जो जंग-ए-अहज़ाब में अपनाई थी और नज्द के क़बीलों को दोबारा मुसलमानों के ख़िलाफ़ इकट्ठा करना शुरू कर दिया।"

"जब मामला यहाँ तक पहुँच गया और मुसलमानों को फिर से उसी तरह का खतरा महसूस होने लगा जैसा अहज़ाब की जंग में हुआ था, तो क़बीला खज़रज के कुछ अंसारी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि अब इस फ़ितने का एक ही हल बचा है कि अबू राफ़े का सफ़ाया कर दिया जाए।"

"नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस बात पर गौर किया कि पूरे मुल्क में खून-ख़राबे से बेहतर यही होगा कि सिर्फ़ एक फ़सादी और साज़िशकर्ता को क़त्ल कर दिया जाए। इसके बाद आपने अंसारी सहाबियों को इजाज़त दी और

अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो के नेतृत्व में चार खज़रजी सहाबियों को अबू राफ़े के क़िले की तरफ़ रवाना किया, लेकिन यह तार्कीद फ़रमाई कि किसी औरत या बच्चे को नुक़सान नहीं पहुँचाना।"

"छह हिजरी के रमज़ान महीने में यह दल रवाना हुआ और निहायत होशियारी के साथ अपने मिशन को अंजाम देकर वापस आ गया, जिससे मदीना पर मंडरा रहे ख़तरों के बादल छूट गए।"

सही बुखारी की हदीस में इस घटना को इस तरह बयान किया गया है:

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एक दल को अबू राफ़े यहूदी के क़त्ल के लिए भेजा और इस अभियान का नेतृत्व हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो को सौंपा। अबू राफ़े मुसलमानों को तकलीफ़ पहुँचाता था और उनके दुश्मनों की मदद करता था।

जब अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी अबू राफ़े के क़िले के पास पहुँचे, तो सूरज गुरुब हो चुका था। अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने साथियों को पीछे छोड़ा और खुद क़िले के दरवाज़े के पास पहुँचे। उन्होंने अपने ऊपर चादर लपेट ली, जैसे कोई ज़रूरी काम से बैठा हो।

जब क़िले का दरबान दरवाज़ा बंद करने के लिए आया, तो उसने अब्दुल्लाह को देखकर कहा: "ऐ आदमी! मैं दरवाज़ा बंद कर रहा हूँ, अगर अंदर जाना है तो जल्दी अंदर आ जाओ।"

अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हो चादर में लिपटे-लिपटे तेज़ी से अंदर घुस गए और एक तरफ़ छिप गए। फिर दरबान ने दरवाज़ा बंद कर दिया और उसकी चाबी एक पास की खूटी पर टांग दी।

इसके बाद, अब्दुल्लाह बिन अतीक का अपना बयान है कि मैं अपनी जगह से निकला और सबसे पहले मैंने किले के दरवाज़े का ताला खोल दिया ताकि ज़रूरत पड़ने पर जल्दी और आसानी से बाहर निकला जा सके। उस समय अबू राफ़े एक ऊपरी कक्ष में था, यानी अपने घर की छत पर एक कमरे में था, और उसके पास बहुत से लोग सभा लगाए बैठे थे और आपस में बातचीत कर रहे थे। जब ये लोग उठकर चले गए और सन्नत्ता हो गया, तो मैं अबू राफ़े के मकान की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर चला गया और मैंने यह एहतियात बरती कि जो भी दरवाज़ा मेरे रास्ते में आया, उसे पार करने के बाद अंदर से बंद कर दिया।

जब मैं अबू राफ़े के कमरे में पहुँचा, तो उस समय उसने दीया बुझाकर सोने की तैयारी कर ली थी और कमरा पूरी तरह से अंधेरे में डूबा हुआ था। मैंने आवाज़ देकर अबू राफ़े को पुकारा। उसने जवाब में पूछा, "कौन है?" बस, मैं उसकी आवाज़ की दिशा का अंदाज़ा लगाकर उसकी ओर झपटा और तलवार से जोरदार वार किया, लेकिन अंधेरा बहुत था और मैं उस समय घबराया हुआ था, इसलिए तलवार का वार गलत पड़ा और अबू राफ़े चीख़ मारकर चिल्लाया। यह सुनकर मैं कमरे से बाहर निकल गया।

कुछ देर बाद मैंने फिर कमरे में जाकर अपनी आवाज़ बदलकर पूछा, "अबू राफ़े, यह शोर कैसा था?" उसने मेरी बदली हुई आवाज़ को नहीं पहचाना और कहा, "तेरी माँ तुझे खोए, अभी-अभी किसी ने मुझ पर तलवार से वार किया है।" यह सुनकर मैं फिर उस पर झपटा और तलवार का वार किया। इस बार वार गहरा पड़ा, लेकिन वह फिर भी नहीं मरा, जिस पर मैंने तीसरी बार वार करके उसे मार डाला। इसके बाद, मैंने जल्दी-जल्दी दरवाज़े खोलते हुए मकान से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन जब मैं सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था, तो मुझे लगा कि मैं पूरी तरह से नीचे आ चुका हूँ, और इस ग़लतफ़हमी में मैं अंधेरे में गिर पड़ा।

इस गिरावट की वजह से मेरी पिंडली टूट गई (और एक दूसरी रिवायत में कहा गया है कि पिंडली की हड्डी अपनी जगह से हट गई)। लेकिन मैंने उसे अपनी पगड़ी से बाँधकर घसीटते हुए खुद को बाहर निकाला, लेकिन मैंने अपने मन में ठान लिया कि जब तक अबू राफ़े की मौत की पूरी तस्दीक न हो जाए, तब तक मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। इसलिए मैं किले के पास ही एक जगह छिपकर बैठ गया। सुबह होते ही किले के अंदर से किसी की आवाज़ आई कि "अबू राफ़े, हिजाज़ का व्यापारी, मर गया है।"

इसके बाद मैं उठा और धीरे-धीरे अपने साथियों के पास पहुँचा और फिर हम लोग मदीना पहुँचे। वहाँ जाकर हमने अल्लाह के रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अबू राफ़े के क़त्ल की सूचना दी। आपने पूरा वाक़या सुनकर मुझसे फ़रमाया, "अपना पैर आगे करो।" जब मैंने अपना पैर आगे किया, तो आपने दुआ पढ़ते हुए उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा। इसके बाद मैंने ऐसा महसूस किया कि जैसे मुझे कोई तकलीफ़ हुई ही नहीं थी।

एक दूसरी रिवायत में कहा गया है कि जब अब्दुल्लाह बिन अतीक ने अबू राफ़े पर हमला किया, तो उसकी पत्नी ने जोर से चीखना शुरू कर दिया। मुझे यह चिंता हुई कि उसकी चीख-पुकार सुनकर दूसरे लोग होशियार न हो जाएँ। इसी पर मैंने उसकी पत्नी पर तलवार उठाई, लेकिन फिर यह याद करके कि अल्लाह के रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने औरतों को मारने से मना फ़रमाया है, मैं इस इरादे से बाज़ आ गया।

यही बात यहाँ दोहराई गई कि महिलाओं को मारना वर्जित था, इसलिए मैंने तलवार नहीं उठाई, जबकि स्थिति बेहद नाज़ुक थी

अबू राफ़े के क्रल्ल के औचित्य पर किसी बहस की ज़रूरत नहीं है।

अबू राफ़े की खूनी साज़िशें इतिहास का एक खुला पन्ना हैं... सिद्धांत रूप में, यह बातें ध्यान में रखनी चाहिए: उस समय मुसलमान बहुत कमज़ोरी की स्थिति में थे और चारों ओर से मुसीबतों से घिरे हुए थे। पूरे अरब में उनके खिलाफ विरोध की आग भड़की हुई थी, और ऐसा प्रतीत होता था कि पूरा देश मुसलमानों को मिटाने के लिए एकजुट हो गया है।

ऐसे नाज़ुक समय में अबू राफ़े इस आग पर तेल डाल रहा था। वह अपने प्रभाव, रसूख और धन से अरब के विभिन्न क़बीलों को इस्लाम के खिलाफ़ उकसा रहा था और ग़ज़वा-ए-अहज़ाब की तरह फिर से अरब के जंगली क़बीलों को मदीना पर हमला करने के लिए एकजुट कर रहा था।

उस समय अरब में कोई संगठित सरकार नहीं थी जिससे न्याय की मांग की जा सके। हर क़बीला अपनी जगह स्वतंत्र और स्वायत्त था। इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए खुद उपाय करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

यहूदी पहले से ही इस्लाम के खिलाफ़ जंग की हालत में थे। मुसलमानों और यहूदियों के बीच खुली दुश्मनी थी।

उस समय के हालात ऐसे थे कि यदि खुलेआम यहूदियों के खिलाफ़ युद्ध छेड़ा जाता, तो इससे जान-माल का भारी नुक़सान होता और आशंका थी कि जंग की आग पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में लेकर व्यापक तबाही मचा देगी।

इन परिस्थितियों में सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने जो कुछ किया, वह बिल्कुल सही और उचित था। युद्ध की स्थिति में, जब कोई क़ौम अस्तित्व के संकट से गुज़र रही हो, तो इस तरह की रणनीतियाँ पूरी तरह जायज़ होती हैं। हर क़ौम और हर राष्ट्र ने समय-समय पर इन्हें अपनाया है। लेकिन यह अफ़सोस की बात है कि आज के नैतिक पतन के दौर में अपराधी के प्रति सहानुभूति की भावना इतनी बढ़ गई है कि एक ज़ालिम को भी हीरो बना दिया जाता है।

आज भी हम देखते हैं कि ज़ालिमों को हीरो बनाया जाता है। जब किसी अपराधी को उसके अपराधों की सज़ा दी जाती है, तो कुछ स्वार्थी लोग उस पर सहानुभूति जताने लगते हैं और उसका अपराध भुला देते हैं।

लेकिन इस्लाम के बारे में हमें यह स्वीकार है कि वह इन झूठी भावनाओं का धर्म नहीं है। इस्लाम अपराधी को अपराधी कहता है और उसकी सज़ा को समाज और राष्ट्र के लिए एक रहमत मानता है। वह एक सड़े हुए अंग को शरीर से अलग करने की शिक्षा देता है, ताकि पूरा शरीर संक्रमित न हो जाए।

रही बात सज़ा के तरीके की, तो इसके बारे में पहले ही बताया जा चुका है कि उस समय अरब की परिस्थितियों और मुसलमानों तथा यहूदियों के बीच जारी युद्ध को देखते हुए जो तरीका अपनाया गया, वह शांति और सुरक्षा के लिहाज़ से सबसे बेहतर और उपयुक्त था...

अब्दुल्लाह बिन अतीक की पिंडली के ठीक होने के बारे में बुखारी की रिवायत में यह स्पष्ट नहीं है कि यह शिफ़ा किसी चमत्कारी तरीके से तुरंत हासिल हुई थी या फिर यह धीरे-धीरे अपने प्राकृतिक कोर्स को पूरा करने के बाद प्रकट हुई। यदि यह दूसरी स्थिति थी, तो इसे एक सामान्य घटना माना जाएगा और अल्लाह के रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की दुआ का प्रभाव सिर्फ़ इतना समझा जाएगा कि आपकी दुआ की बरकत से इस चोट ने कोई स्थायी असर नहीं छोड़ा और कोई नकारात्मक परिणाम नहीं निकला, बल्कि अब्दुल्लाह की पिंडली ने अंततः अपनी पूरी ताकत वापस पा ली और चोट का असर पूरी तरह समाप्त हो गया।

लेकिन यदि यह शिफ़ा किसी चमत्कारी रूप में तुरंत हासिल हुई थी, तो यह निस्संदेह अल्लाह तआला की विशेष कुदरत का एक करिश्मा था, जो उसने अपने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की दुआ और बरकत के परिणामस्वरूप प्रकट किया।

(सिरत ख़ातमुन नबि्य्हीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम - हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 721-725)

राय व्यक्त की। उस समय के समाचार पत्र "मैनचेस्टर गार्डियन" ने लिखा: "इस सम्मेलन में हलचल मचाने वाली घटना जो इस समय सामने आई, वह आज दोपहर इस्लाम के एक नए समुदाय का उल्लेख था। 'नए समुदाय' शब्द हमने सुविधा के लिए इस्तेमाल किया है, जबकि ये लोग इसे सही नहीं मानते। इस समुदाय की स्थापना, उनके अनुसार, आज से 34 वर्ष पूर्व उस 'मसीह' ने की थी जिसकी भविष्यवाणी बाइबल और अन्य धार्मिक ग्रंथों में की गई है।"

"इस सिलसिले का दावा है कि ख़ुदा तआला ने अपने स्पष्ट वहाँ (प्रकाशना) के तहत इस आंदोलन की नींव रखी है ताकि वह मानवजाति को इस्लाम के माध्यम से अल्लाह तक पहुँचा सके। एक भारतीय व्यक्ति, जो सफेद पगड़ी पहने हुए था, जिसका चेहरा नूरानी (प्रकाशमान) और आकर्षक था, जिसकी काली दाढ़ी थी, और जिसका खिताब 'हिज़ होलीनेस खलीफ़तुल मसीह' या संक्षेप में 'खलीफ़तुल मसीह' था, ने अपने व्याख्यान में यह विचार प्रस्तुत किए।"

आपका व्याख्यान, जिसका शीर्षक "इस्लाम में अहमदिया तहरीक" था, आपके एक अन्य शिष्य ने अत्यंत कुशलता के साथ पढ़ा। आपने अपने व्याख्यान को, जिसमें अधिकतर इस्लाम के समर्थन और पुष्टि की बातें थीं, एक जोशीली अपील के साथ समाप्त किया, जिसमें आपने श्रोताओं को इस नए मसीह और उसकी नई शिक्षा को स्वीकार करने का निमंत्रण दिया।

"यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि इस व्याख्यान के बाद जिस माला में प्रशंसा और तालियों के माध्यम से खुशी का इज़हार किया गया, वह इस सम्मेलन के किसी अन्य व्याख्यान पर नहीं किया गया था।"

दूसरा भाषण: "जमाअत अहमदिया और सेवा-ए-खल्क"

इस सत्र का दूसरा भाषण श्रीमान मौलाना तनवीर अहमद खादिम साहब, इंचार्ज शुऊबा रिश्ता व नाता ने पंजाबी भाषा में प्रस्तुत किया। उन्होंने फ़रमाया: "अल्लाह की रज़ा प्राप्त करने के लिए, धार्मिक भेदभाव और जाति-पाति से परे, अल्लाह की मख़लूक (सृष्टि) की सेवा, सहायता और मदद करना 'ख़िदमत-ए-खल्क' (मानव सेवा) कहलाता है। सेवा-ए-खल्क अल्लाह से प्रेम की निशानी, ईमान की आत्मा और दुनियाँ व आख़िरत में सफलता का माध्यम है। केवल आर्थिक सहायता ही मानव सेवा नहीं है, बल्कि किसी की देखभाल करना, किसी को शिक्षा देना, उपयोगी परामर्श देना, किसी को कोई कौशल सिखाना, ज्ञान की संरक्षता करना, शैक्षिक और कल्याणकारी संस्थाएँ स्थापित करना, किसी के दुःख-दर्द में सहभागी होना और इसी प्रकार के अन्य कार्य भी सेवा-ए-खल्क की विभिन्न राहें हैं।"

इस्लाम में इंसानियत के सम्मान और ख़ुदा की मख़लूक की सेवा व दुख दर्द बाँटने को बहुत ऊँची नज़र से देखा गया है। इसी कारण पवित्र कुरआन और हदीस-ए-नबवी में जगह-जगह इंसानियत की सेवा को बेहतरीन अख़लाक़ और अज़ीम इबादत करार दिया गया है।

सम्माननीय वक्ता ने कुरआन करीम और हदीस-ए-नबवी के हवाले से सेवा-ए-खल्क के बारे में इस्लामी शिक्षाएँ प्रस्तुत कीं और इस संदर्भ में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) का उस्वा-ए-हसना (आदर्श उदाहरण) बयान किया। साथ ही इस संबंध में जमात-ए-अहमदिया पूरी दुनिया में जिस तरह सेवा-ए-खल्क के काम अंजाम दे रही है, उसका भी ज़िक्र किया और इस सिलसिले में गैरों (दूसरे लोगों) के विचार भी प्रस्तुत किए।

तास्सुर (अनुभव) श्रीमान अब्दुल क़ादिर मुदल्लिल साहिब, सदर जमात-ए-अहमदिया, फ़लस्तीन। इस जलसे में श्रीमान अब्दुल क़ादिर मुदल्लिल साहिब, जो जमात-ए-अहमदिया फ़लस्तीन के सदर (अध्यक्ष) हैं, ने अपने अनुभव साझा करते हुए फ़रमाया:

"ख़ुदा तआला का लाख-लाख शुक्र है कि मसीह मौऊद (अ.स.) की जमात में शामिल होने के पच्चीस साल बाद इस मुक़द्दस बस्ती में हाज़िर होने की मेरी पुरानी तमन्ना पूरी कर दी।

मेरे प्यारे सैय्यदी अहमद (अ.स.), मैं एक लंबे अरसे से आपकी किताबों और तहरीरों (लेखों) के समंदर में गोता लगा रहा हूँ, और इन तहरीरों ने मुझे दिल की गहराइयों तक मंत्रमुग्ध कर रखा है। लेकिन आज जब मुझे उन रास्तों और गलियों में चलने की तौफ़ीक़ मिल रही है, जहाँ आपके मुबारक (पवित्र) कदम पड़े, तो मेरा दिल दोबारा उसी जादुई एहसास से महक रहा है।

ऐ मेरे मालिक! तू मेरे दिल की कैफ़ियत (स्थिति) को बेहतर जानता है और उसकी बे-तरतीब धड़कनों से पूरी तरह वाकिफ़ है।

शेष आगे ..



पृष्ठ 01 का शेष

129वां जलसा सालाना क्रादियान 29, 28, 27 दिसंबर 2024 को आयोजित हो कर बखैर ओ ख़ूबी संपन्न हुआ। तीनों दिनों के जलसा कार्यक्रमों की लाइव स्ट्रीमिंग, जिससे देश और विदेश में जलसे से लाभ प्राप्त किया गया। लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से 63,666 लोगों ने जलसे की कार्यवाही देखी और सुनी। 16,000 से अधिक आशिक्राने अहमदियत की जलसे में शिरकत। 42 देशों से विभिन्न क्रौमों के अज़ीज़ और ख़वातीन की नुमाइंदगी।

MTA इंटरनेशनल के ज़रिए सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) का रोशन बसीरत से भरा समापन भाषण।

समापन भाषण में इस्लामाबाद (यूके) में जमाअत के अज़ीज़ों का इज्तिमा। कुछ अफ्रीकी देशों के जलसे और समापन भाषण में उनकी शिरकत। नमाज़-ए-तहज्जुद। दर्स-उल-कुरआन और ज़िक्र-ए-इलाही से मुनव्वर माहौल। उलमा-ए-किराम के गहरी मालूमात से भरपूर तक्रारीर। 9 भाषाओं में कार्यक्रमों का अनुवाद। जमाअत के लोगों की मालूमात बढ़ाने के लिए तरबियती उमूर पर आधारित डॉक्यूमेंट्री और विभिन्न मालूमाती नुमाइशों का आयोजन। निकाहों के ऐलान। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसे की कवरेज। पुरसुकून और ख़ुशगवार माहौल में जलसे की तमाम कार्यवाही का मुकम्मल होना।

भाग - 2 (किस्त दोम)

दिनांक 28 दिसंबर 2024, शनिवार

दूसरा दिन, पहला सत्र

यह सत्र माननीय मुनीर अहमद साहिब हाफ़िज़ाबादी, सचिव मज्लिस कारपरदाज़, बहिश्ती मक़बरा क्रादियान की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। तिलावत-ए-कुरआन-ए-मजीद अज़ीज़ शेख़ मुहम्मद याह्या, छात्र, जामिआ अहमदिया क्रादियान ने की और इसका अनुवाद श्रीमान मौलवी अब्दुल वकील नियाज़ साहिब, नायब नाज़िर इस्लाह व इरशाद, दक्षिण भारत, क्रादियान ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद श्रीमान यासिर अहमद नाइक ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निम्नलिखित कविता रचना पढ़ी :

"हमें उस यार से तक्रवा अता है
ना ये हम से कि एहसान-ए-ख़ुदा है"

सत्र का पहला भाषण

श्रीमान तारिक अहमद साहिब, ऐडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद, नूरुल इस्लाम, क्रादियान ने "आलमी जंग के बुरे प्रभावों से सुरक्षित रहने के लिए हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़) के निर्देश" विषय पर भाषण दिया।

उन्होंने सूरः बनी इस्राईल की आयत नंबर 16 की तिलावत कर उसका अनुवाद प्रस्तुत किया और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो भविष्यवाणियों से संबंधित उद्धरण पेश किए।

फ़ाज़िल (विद्वान) वक्ता ने कहा:

आज हर व्यक्ति असुरक्षा का शिकार है और देख रहा है कि दुनिया में अशांति फैल रही है। विभिन्न क्षेत्रों में युद्ध की आग भड़क चुकी है। वर्तमान समय में अल्लाह की नाराज़गी का एक रूप और वैश्विक युद्ध के रूप में प्रकट हो सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस युद्ध के बुरे प्रभाव केवल एक पारंपरिक युद्ध या मौजूदा पीढ़ी तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि इसके भयावह परिणाम आने वाली कई पीढ़ियों तक दिखाई देंगे।

इमाम-ए-आख़िरुज़्ज़मान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जीवन भर न केवल मुसलमानों को, बल्कि पूरी दुनिया को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने तौबा (प्रायश्चित) न की और सच्चे ईश्वर, उसके रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और समय के इमाम पर ईमान न लाए तो वे अल्लाह के कठोर प्रकोप में ग्रस्त होंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कथन:

"मैं सच्चाई से कहता हूँ कि इस देश की बारी भी निकट आती जा रही है। नूह का युग तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूट की भूमि की घटना तुम स्वयं देख लोगे। लेकिन अल्लाह क्रोध में धीमा है। तौबा करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो ईश्वर को छोड़ता है वह एक कीड़े के समान है, न कि मनुष्य। जो उससे नहीं डरता

वह मरा हुआ है, न कि जीवित।"

(हक़ीक़तुल वही, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 22, पृष्ठ 269)

फ़ाज़िल वक्ता ने कहा कि तीसरे विश्वयुद्ध के दुष्प्रभावों से बचने का कोई और मार्ग नहीं है सिवाय इसके कि मनुष्य अल्लाह की ओर झुके और उसे अपना सहायक एवं रक्षक बनाए।

पिछले दो दशकों से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़) दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध के खतरों से आगाह कर रहे हैं और जमाअत के लोगों को दुआओं के साथ-साथ आत्म-सुधार और प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान देने की हिदायत दे रहे हैं ताकि वे स्वयं और अपनी आने वाली पीढ़ियों को इस व्यापक विनाश के भयानक प्रभावों से बचा सकें।

फ़ाज़िल वक्ता ने इस संबंध में हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला) के कई निर्देश प्रस्तुत किए और अंत में निम्नलिखित उद्धरण देकर अपना भाषण समाप्त किया: हज़ूर अनवर फरमाते हैं:

"दुनिया बड़ी भयावह तबाही की ओर तेज़ी से बढ़ रही है। न तो मुसलमानों में न्याय बचा है, न ही ग़ैर-मुसलमानों में। बल्कि, सभी अत्याचारों की हदें पार कर चुके हैं। ऐसे समय में दुनिया की आँखें खोलने और अत्याचार से बचाने की ज़िम्मेदारी केवल जमाअत अहमदिया ही निभा सकती है। इसके लिए हमें अपने-अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए, साथ ही दुआओं पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मुसलमान देशों की अन्यायपूर्ण नीतियों और उनके बुरे कर्मों ने उन्हें आंतरिक संघर्षों में उलझा दिया है और बाहरी ख़तरे भी बहुत तेज़ी से उनके सिर पर मंडरा रहे हैं। वास्तव में, वे उनके दरवाजे तक पहुँच चुके हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि एक बड़ा युद्ध सिर उठाए खड़ा है और दुनिया यदि उसके परिणामों से अनभिज्ञ नहीं है तो लापरवाह अवश्य है। अतः, इस समय मसीह मोहम्मदी के अनुयायियों को अपनी ज़िम्मेदारी निभाते हुए दुनिया को विनाश से बचाने के लिए दुआओं का भरपूर हक़ अदा करना चाहिए। अल्लाह हमें इस कर्तव्य को निभाने की तौफ़ीक़ दे और दुनिया को विनाश से बचा ले। आमीन।"

(अल्-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 17 मई 2013, पृष्ठ 7)

दूसरे दिन का पहला सत्र

इस सत्र की अध्यक्षता श्रीमान मुनीर अहमद साहब हाफ़िज़ाबादी, सेक्रेटरी मज्लिस कारपरदाज़ बहिश्ती मक़बरा क्रादियान ने की। कुरआन मजीद की तिलावत अज़ीज़ शेख़ मुहम्मद यहिया, मुतअल्लिम जामिआ अहमदिया क्रादियान ने की और इसका अनुवाद श्रीमान मौलवी अब्दुल वकील नियाज़ साहब, नाइब नाज़िर इस्लाह व इरशाद, दक्षिणी हिंद, क्रादियान ने पेश किया।

इसके बाद श्रीमान यासिर अहमद नाइक ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निम्नलिखित नज़म पेश की:

"हमें उस यार से तक्रवा अता है, न यह हम से कि एहसान-ए-खुदा है।" पहली तक्ररीर: पहली तक्ररीर श्रीमान के तारिक अहमद साहब, एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद, नूरुल इस्लाम, क्रादियान ने "आलमी जंग के बदअसरात से महफूज़ रहने के लिए हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ अज़ीज़ के इरशादात" के शीर्षक पर की।

आपने सूरह बनी इस्राईल की आयत नंबर 16 की तिलावत कर इसका अनुवाद पेश किया और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भविष्यवाणियों से संबंधित दो इक्तिबासात (उद्धरण) भी पेश किए।

फाज़िल मुकर्रर (वक्ता) ने कहा कि आज हर इंसान अशांति का शिकार हो रहा है। दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में युद्ध की आग भड़क चुकी है। यह भी संभव है कि ईश्वर का प्रकोप एक और विश्वयुद्ध के रूप में प्रकट हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इरशाद:

"मैं सच्चाई से कहता हूँ कि इस देश की बारी भी करीब आती जा रही है। नूह का ज़माना तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूट की ज़मीन की घटना को तुम अपनी आँखों से देख लोगे। मगर खुदा क्रोध में धीमा है, इसलिए तौबा करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।"

(हकीकतुल वही, रूहानी खज़ाइन, भाग 22, पृष्ठ 269)

आपने कहा कि तीसरे विश्वयुद्ध के दुष्प्रभावों से बचने का एकमात्र तरीका ईश्वर की ओर झुकना और उसकी मदद लेना है।

हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ अज़ीज़) का इरशाद: "दुनिया एक भयानक तबाही की ओर तेजी से बढ़ रही है। मुस्लिम देशों में अन्याय और अत्याचार की हद हो चुकी है। ऐसे में दुनिया को बचाने की जिम्मेदारी सिर्फ जमाअत अहमदिया निभा सकती है। हमें न केवल प्रयास करना चाहिए बल्कि दुआओं का भी सहारा लेना चाहिए।"

(अल्-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 17 मई 2013, पृष्ठ 7)

दूसरी तक्ररीर: दूसरी तक्ररीर श्रीमान मुज़फ़्फ़र अहमद नासिर साहब, नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क्रादियान ने "खलीफ़ा-ए-वक़््त का मुक़ाम व मरतबा, ख़िलाफ़त की इताअत और इस से वाबस्तगी की अहमियत व बरकात" के शीर्षक पर की।

आपने सूरह नूर की आयत 56 की तिलावत कर उसका अनुवाद पेश किया और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में ख़िलाफ़त के मान्ये बयान किए।

फाज़िल मुकर्रर ने हदीस बयान की: "जो व्यक्ति अपने शासक में कोई नापसंद बात देखे, उसे चाहिए कि वह सब्र करे क्योंकि जो व्यक्ति शासन से बालिशत भर भी अलग होगा, उसकी मौत जाहिलाना मौत होगी।"

(हदीस-ए-नबी स.अ.व) आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि. और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. की मिसालें पेश कीं और कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उनके खलीफ़ा की इताअत की ऐसी मिसालें मिलती हैं कि शुरुआती इस्लामी दौर की याद ताज़ा हो जाती है।

फाज़िल मुकर्रर ने हज़रत मियां करीम बरखा साहब, ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के चुनाव के समय की घटना और हज़रत खलीफ़ा-ए-अव्वल रज़ि. के मशवरे पर 65 साल की उम्र में कुरआन हिफ़ज़ करने वाले हज़रत अबू अब्दुल्लाह साहब का वाकिआ बयान किया।

हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ अज़ीज़) का इरशाद: "हमेशा याद रखो कि तुम्हारा मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा की रज़ा होनी चाहिए और उसके दिए हुए क़वायद और फैसलों की पूरी पाबंदी करनी चाहिए।"

(ख़ुत्बा जुम्आ, 27 अगस्त 2004)

तीसरी तक्ररीर: तीसरी तक्ररीर श्रीमान रफ़ीक़ अहमद बेग साहब, नाज़िर

बैतुलमाल आमद, क्रादियान ने "माली कुर्बानी के सिलसिले में अफ़राद-ए-जमाअत का अदीमुल मिसाल नमूना और अफ़ज़ाल-ए-इलाहिया" के शीर्षक पर की। आपने सूरह आले-इमरान की आयत "لن تنالوا البرحتى تنفقوا مما تحبون" की तिलावत कर उसका अनुवाद पेश किया:

"तुम हरगिज़ भलाई को नहीं पा सकते जब तक कि तुम अपनी पसंदीदा चीज़ों में से खर्च न करो।"

फाज़िल मुकर्रर ने कहा कि हज़ूर अनवर (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ अज़ीज़) बार-बार जमाअत को अल्लाह की राह में माली कुर्बानी की तलक़ीन फरमाते हैं। उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा की कुर्बानियों के इमान अफ़रोज़ वाक़ियात बयान किए।

हदीस-ए-नबी (स.अ.व):

"दो शख्सों के सिवा किसी पर रश्क नहीं करना चाहिए: पहला वह जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसने उसे राहे-हक़ में खर्च किया, दूसरा वह जिसे इल्म दिया और उसने लोगों को सिखाया।"

इसके बाद फाज़िल मुकर्रर ने दुनिया के विभिन्न देशों में अहमदियों की माली कुर्बानियों के वाक़ियात बयान किए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इरशाद:

"मेरे प्यारे दोस्तों! मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि मुझे खुदा ने सच्चा जोश आप लोगों की हमदर्दी के लिए बरखा है और एक सच्ची मआरिफ़त आपकी इमान व यकीन में इज़ाफ़ा करने के लिए दी है। इस राह में हर व्यक्ति को अपनी कुदरत और तौफ़ीक़ के मुताबिक़ खर्च करना चाहिए।"

(इज़ाला औहाम, रूहानी खज़ाइन, भाग 3, पृष्ठ 516)

अल्लाह हमें ख़िलाफ़त से वाबस्ता रखे और अपनी रहमतें नाज़िल करे। आमीन।

यहाँ पूरा उर्दू पाठ हिंदी में अनुवादित किया गया है:

अल्लाह तआला हम सबको आर्थिक कुर्बानी के उच्च मानदंड प्राप्त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

दूसरा दिन, दूसरा सत्र

दूसरे दिन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्रीमान सैयद तनवीर अहमद साहब, सदर मजलिस वक्फ़-ए-जदीद ने की। श्रीमान हाफ़िज़ फ़ारूक़ अहमद अज़म साहब ने सूरह अल-हुज़रात की आयतें 12 से 14 की तिलावत की, जिसका उर्दू अनुवाद श्रीमान शमीम अहमद ग़ौरी साहब, सदर मजलिस ख़ुदामुल अहमदिया भारत ने पेश किया।

इसके बाद श्रीमान मुर्शिद अहमद डार और उनके साथियों ने बहुत ही मधुर स्वर में सैयदना हज़रत मुसलिह मऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का निम्नलिखित कविता कलाम (काव्य) तराने के रूप में प्रस्तुत किया:

"मेरी रात-दिन बस यही एक सदा है,
कि इस आलम-ए-कौन का एक खुदा है।
उसी ने है पैदा किया इस जहाँ को,
सितारों को, सूरज को और आसमान को।"

इसके बाद इस सत्र का पहला भाषण श्रीमान मौलाना मुनीर अहमद ख़ादिम साहब ने "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़िताब-ए-अहमदियत यानी हकीकी इस्लाम, उसका पृष्ठभूमि और दीर्घकालिक प्रभाव" विषय पर दिया। अपने भाषण के प्रारंभ में, आपने सैयदना हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का वह स्वप्न (दृष्टान्त) बयान किया, जिसमें आपने देखा कि आप लंदन शहर में एक मिंबर पर खड़े हैं और अंग्रेज़ी भाषा में अत्यंत तर्कसंगत बयान से इस्लाम की सच्चाई को प्रकट कर रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने इसकी यह ताबीर (व्याख्या) बयान फ़रमाई कि यद्यपि मैं स्वयं नहीं, लेकिन मेरी लिखित रचनाएँ उन लोगों में फैलेंगी और बहुत से सच्चे अंग्रेज़ इस सत्य को स्वीकार कर लेंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ ऐसे ख़्वाब (सपने) देखे जिनसे आपने यह निष्कर्ष निकाला कि यूरोप की यात्रा और सम्मेलन में भाषण अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसकी तक्रदीर से है। इस यात्रा में आप रेल से मुंबई पहुँचे और वहाँ से समुद्री जहाज़ के माध्यम से अदन के लिए रवाना हुए। फिर अदन से पोर्ट सईद और काहिरा से होते हुए बैतुल मुक़द्दस (यरोशलम) पहुँचे। बैतुल मुक़द्दस से सीरिया और फिर लंदन गए।

लंदन यात्रा और ऐतिहासिक भाषण

लंदन में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कई सप्ताह ठहरकर वहाँ इस्लाम के प्रचार-प्रसार से संबंधित अनेक योजनाएँ प्रस्तुत कीं। ब्रिटिश प्रेस में आपकी आमद, आपकी शख्सियत और यूरोप में इस्लाम के प्रचार के आपके संकल्प की व्यापक चर्चा हुई।

कुछ पक्षपाती कैथोलिक समाचार पत्रों ने लिखा कि यह ईसाइयत के खिलाफ़ एक साज़िश है, जबकि कुछ ने लिखा कि ब्रिटेन में आने वाले किसी लॉर्ड को भी इतनी कवरेज नहीं दी जाती, जितनी कि इमाम-ए-जमाअत अहमदिया को मिली। इसी दौरान, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ब्रिटेन की पहली मस्जिद "मस्जिद फ़ज़ल" की आधारशिला 19 अक्टूबर 1924 को रखी।

हज़रत मुसलिह मऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का ऐतिहासिक व्याख्यान आपका महान व्याख्यान, जिसने श्रोताओं को पूरे एक घंटे तक आश्चर्यचकित रखा, सभी ने अत्यंत ध्यान और गंभीरता से सुना। इसके बारे में कई बुद्धिजीवियों ने अपनी

ख़ुल्ब: जुमअ:

ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! मैं लोगों से नहीं डरता था, लेकिन जब मैंने आपको देखा तो मेरी समझ जाती रही और मेरा दिल कमज़ोर हो गया। फिर मुझे अपने उस इरादे का अहसास हुआ, जो मेरा दृढ़ संकल्प था, जिसके बारे में कई घुड़सवार प्रयास कर चुके थे, परंतु कोई सफल नहीं हुआ। मैंने जान लिया कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सुरक्षा की गई है और निःसंदेह आप सत्य पर हैं।

(एक हमलावर की खुली स्वीकारोक्ति)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अम्र बिन उमैया और सलमा बिन असलम को अबू सुफ़यान बिन हरब की ओर भेजा

और फ़रमाया कि अगर तुम दोनों उसे बेख़बरी की हालत में पाओ तो उसे क़त्ल कर देना।

सरिय्या अब्दुल्लाह बिन रवाहा की उसैर बिन रिज़ाम की ओर भेजे जाने और सरिय्या अम्र बिन उमैया जुमरी के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वर्णन।

श्रीमान शेख मुबारक अहमद साहिब (नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया रबवा), श्रीमान मुहम्मद मुनीर इदलेबी साहिब (आफ शाम) और श्रीमान अब्दुल बारी तारिक साहिब (इंचार्ज कंप्यूटर सेक्शन वक्फे जदीद रबवा) का ज़िक्रे-खैर और गायबाना जनाज़े की नमाज़।

अल्लाह तआला के फज़ल से वक्फ़ को शेख मुबारक साहिब ने बखूबी निभाया है। मैंने भी देखा है, जब मैं भी अंजुमन में था तो उन्होंने मेरे साथ भी काम किया है। हमेशा धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने की एक मिसाल थे।

ख़ुल्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरे (यू.के)

आज जिन सराया (सैन्य अभियानों) का उल्लेख होगा, उनमें से एक सरिय्या अब्दुल्लाह बिन रवाहा

जो उसैर बिन रिज़ाम की ओर भेजा गया था, उसका वर्णन पहले किया जाएगा।

अब्दुल्लाह बिन रवाहा का यह सरिय्या शवाल 6 हिजरी में उसैर या युसैर बिन रिज़ाम की ओर खैबर में भेजा गया। विस्तार से बताया गया है कि जब अबू राफ़ेह सलाम बिन अबी हकीक की हत्या कर दी गई, तो यहूदियों ने उसैर बिन रिज़ाम को अपना नेता नियुक्त किया। वह यहूदियों के बीच खड़ा होकर भाषण देने लगा और कहने लगा:

"अल्लाह की कसम! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब भी यहूदियों की किसी ओर गए या अपने साथियों में से किसी को भेजा, तो वह अपनी योजना में सफल हुए। लेकिन मैं वह काम करूंगा जो मेरे साथियों में से किसी ने नहीं किया।"

यहूदियों ने पूछा, "तुम्हारा इरादा क्या है?"

उसैर बिन रिज़ाम ने कहा:

"मैं कबीला ग़तफ़ान के पास जाऊंगा और उन्हें इकट्ठा करके मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ युद्ध के लिए ले आऊंगा। हम उनके घर में घुसकर हमला करेंगे, क्योंकि जब कोई अपने दुश्मन के घर पर हमला करता है, तो किसी न किसी हद तक वह अपने मकसद में सफल हो ही जाता है।"

यहूदी इस विचार से सहमत हो गए और उसैर बिन रिज़ाम ग़तफ़ान और अन्य कबीलों के पास गया ताकि उन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ युद्ध के लिए तैयार कर सके।

जब यह खबर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तक पहुँची, तो आपने इस खबर की सत्यता की जांच करने के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो को तीन लोगों के साथ माहे रमज़ान में गुप्त रूप से भेजा।

(सब्लुल्-हुदा, भाग 6, पृष्ठ 111, दारुल-कुतुबुल-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं:

"जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इन हालात की जानकारी मिली, तो आपने तुरंत अपने एक अंसारी सहाबी, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो को तीन अन्य सहाबियों के साथ खैबर की ओर भेजा और उन्हें ताकीद की कि गुप्त रूप से जाएं और सभी हालात का पता लगाकर जल्दी लौट आएं।"

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी खैबर पहुँचे

और बहुत सतर्कता से स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने इस हद तक होशियारी बरती कि खैबर के किलों के पास घूमते हुए उसैर बिन रिज़ाम और उसके साथियों की बातचीत सुन ली और स्वयं यह सत्यापित कर लिया कि वे वास्तव में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ साजिश कर रहे हैं।

उसी दौरान, ख़ारिजा बिन हुसैल नामक एक गैर-मुस्लिम व्यक्ति संयोगवश खैबर से मदीना आया। उसने भी अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो की रिपोर्ट की पुष्टि की और कहा:

"मैं उसैर को ऐसी हालत में छोड़कर आया हूँ कि वह मदीना पर हमला करने के लिए अपनी सेना इकट्ठा कर रहा था।"

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का निर्णय इस पुष्टि के बाद, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो के नेतृत्व में 30 सहाबियों की एक पार्टी खैबर की ओर भेजी।

हालांकि, हदीस और ऐतिहासिक विवरणों से यह स्पष्ट नहीं होता कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस दल को विशेष रूप से क्या निर्देश दिए थे। लेकिन, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो और उसैर बिन रिज़ाम के बीच जो बातचीत हुई, उससे यह स्पष्ट होता है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मंशा यह थी कि उसैर को मदीना बुलाकर उसके साथ कोई समझौता किया जाए ताकि उसकी फसाद फैलाने की गतिविधियाँ समाप्त हो जाएं और देश में शांति स्थापित हो सके।

शांति समझौते की पेशकश

जब अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो की टीम खैबर पहुँची, तो उन्होंने सबसे पहले उसैर बिन रिज़ाम से बातचीत के दौरान शांति समझौते की शर्तें निर्धारित कीं। इससे पता चलता है कि मुसलमानों को यह आशंका थी कि बातचीत के दौरान ही उसैर कोई धोखा न कर दे।

उसैर बिन रिज़ाम ने यह स्वीकार किया और कहा:

"ठीक है, मैं समझौता करता हूँ।"

लेकिन, अपनी सुरक्षा की गारंटी के लिए, उसैर ने अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो से भी यह शर्त रखी कि वे उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उद्देश्य:

अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसैर से बातचीत करते हुए स्पष्ट किया

कि:

"रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे साथ शांति समझौता करना चाहते हैं ताकि यह युद्ध समाप्त हो जाए। इसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि तुम स्वयं मदीना आकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से आमने-सामने बात करो। अगर यह समझौता हो जाता है, तो मुझे उम्मीद है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, और यह भी संभव है कि तुम्हें खैबर का आधिकारिक प्रमुख बना दिया जाए।"

उसैर बिन रिज़ाम, जो अत्यंत महत्वाकांक्षी था, को यह प्रस्ताव पसंद आया। लेकिन यह भी संभव था कि उसके मन में कोई छिपी योजना हो। उसने यह सुझाव पसंद करने का दिखावा किया और यहूदियों के नेताओं को बुलाकर इस प्रस्ताव पर सलाह-मशविरा किया।

लेकिन यहूदी, जो इस्लाम के प्रति अत्यधिक शत्रुता रखते थे, आमतौर पर इस प्रस्ताव के खिलाफ थे और उन्होंने उसैर को चेतावनी दी कि:

"हमें यह उम्मीद नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें खैबर का नेता मानेंगे।"

लेकिन उसैर, जो हालात को बेहतर समझता था, अपने निर्णय पर अडिग रहा और कहने लगा:

"तुम नहीं जानते, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस युद्ध से तंग आ चुके हैं और दिल से चाहते हैं कि किसी भी तरह इस लड़ाई का अंत हो जाए।"

अल्अरज़, उसैर बिन रिज़ाम, अब्दुल्लाह बिन रवाहा की पार्टी के साथ मदीना चलने के लिए तैयार हो गया और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की तरह उसने भी तीस यहूदियों को अपने साथ ले लिया। जब ये दोनों पार्टियाँ खैबर से निकलकर एक स्थान 'करकरह' में पहुँचीं, जो खैबर से छह मील की दूरी पर था, तो उसैर की नीयत बदल गई, या यदि उसकी नीयत पहले से ही खराब थी, तो यह समझना चाहिए कि उसके इरादों को प्रकट करने का समय आ गया।

इसलिए, उसने बातें करते-करते बड़ी होशियारी से मुसलमानों की पार्टी के एक सम्मानित सदस्य, अब्दुल्लाह बिन उनीस अंसारी की तलवार की तरफ हाथ बढ़ाया। अब्दुल्लाह फ़ौरन भाँप गए कि इस बदनसीब के इरादे बदल चुके हैं। उन्होंने तुरंत अपनी ऊँटनी को एड़ लगाई और उसे आगे कर लिया, फिर उसैर की तरफ घूमकर आवाज़ दी, "ऐ ख़ुदा के दुश्मन! क्या तुम हमारे साथ ग़द्दारी करना चाहते हो?"

अब्दुल्लाह बिन उनीस ने ये शब्द दो बार दोहराए, लेकिन उसैर ने कोई जवाब नहीं दिया और न ही उसने अपनी कोई सफ़ाई पेश की। बल्कि वह सीधे युद्ध के लिए तैयार हो गया। यह शायद यहूदियों में पहले से तय किया गया संकेत था कि जैसे ही अवसर मिले, सब मिलकर मुसलमानों पर टूट पड़ें।

इसी जगह, ठीक रास्ते में, मुसलमानों और यहूदियों के बीच तलवारें खिंच गईं और युद्ध शुरू हो गया। हालाँकि दोनों पार्टियाँ संख्या में बराबर थीं और यहूदी मानसिक रूप से पहले से तैयार थे, जबकि मुसलमानों को इसका कोई अंदाज़ा नहीं था और उनका युद्ध का कोई इरादा भी नहीं था। मगर अल्लाह का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि कुछ मुसलमान ज़ख्मी तो हुए, लेकिन किसी की जान नहीं गई। दूसरी तरफ़, सारे यहूदी अपनी ग़द्दारी का अंजाम भुगतते हुए खाक में मिल गए।

जब सहाबा की यह पार्टी मदीना वापस पहुँची और पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हालात की जानकारी दी गई, तो आपने मुसलमानों के सही-सलामत बच जाने पर अल्लाह का शुक्र अदा किया और फ़रमाया:

"क़द नज्जाकुमुल्लाहु मिना अल-क़ौमिज़-ज़ालिमीन"

"शुक्र करो कि अल्लाह ने तुम्हें इस ज़ालिम पार्टी से निजात दी।"

इस घटना को लेकर कुछ ईसाई इतिहासकारों ने यह आपत्ति की है कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा की पार्टी ने उसैर वगैरह को खैबर से इसी नीयत से निकाला था कि रास्ते में मौक़ा पाकर उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। मगर यह आपत्ति पश्चिमी ज़िद और द्वेष का एक अनचाहा प्रदर्शन मात्र है, जिसका हकीकत से कोई ताल्लुक नहीं।

जैसा कि ऊपर बताया गया, इतिहास में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि मुसलमान इस इरादे से वहाँ गए थे। बल्कि, केवल अब्दुल्लाह बिन उनीस के ये शब्द ही इस बात को साबित करने के लिए काफ़ी हैं कि "ऐ ख़ुदा के दुश्मन! क्या ग़द्दारी का इरादा है?" और फिर पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ये शब्द कि "अल्लाह का शुक्र करो कि उसने तुम्हें इस ज़ालिम पार्टी से निजात दी।" इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि मुसलमानों की नीयत बिल्कुल साफ़ और शांतिपूर्ण थी और जो कुछ हुआ, वह सिर्फ़ यहूदियों की ग़द्दारी का नतीजा था, जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उन्हीं पर उलट दिया।

(स्रोत: सीरतख़ातमन नबिख़ीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम – हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए., पृष्ठ 741-739)

फिर सरिय्या अम्र बिन उमय्या ज़मरी यह अबू सुफ़ियान की तरफ़ भेजा गया था। इब्र हिशाम, इब्र कसीर और तबरी आदि ने इस सरिय्या को 4 हिजरी के घटनाक्रम में 'वाक़ेआ-ए-रजीअ' के बाद बयान किया है, लेकिन इब्र साद ने इसे 6 हिजरी के सराया के अंतर्गत रखा है और ज़रक़ानी ने भी इब्र साद को प्राथमिकता देते हुए इसे 6 हिजरी के अंतर्गत ही लिखा है।

(स्रोत: अस-सीरत-उन-नबिविया, इब्र हिशाम, पृष्ठ 885, दार-उल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(इब्र कसीर, खंड 3, पृष्ठ 135, दार-उल-मआरिफ़, बैरुत)

(तारीख़ तबरी, खंड 2, पृष्ठ 79, दार-उल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(तबक़ात अल-कुबरा, खंड 2, पृष्ठ 72-71, दार-उल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(ज़रक़ानी, खंड 3, पृष्ठ 169-166, दार-उल-कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी सीरतख़ातमन नबिख़ीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में इस सरिय्या को 6 हिजरी में बयान किया है और विस्तार में लिखा है कि, "इस सरिय्या की तारीख़ को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है।

इब्र हिशाम और तबरी इसे 4 हिजरी में लिखते हैं, लेकिन इब्र साद इसे 6 हिजरी में रखते हैं, और अल्लामा क़स्तलानी व ज़रक़ानी ने इब्र साद की राय को प्राथमिकता दी है। इसलिए, मैंने भी इसे 6 हिजरी में दर्ज किया है। अल्लाह बेहतर जानता है।"

(स्रोत: सीरत ख़ातमन नबिख़ीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए., पृष्ठ 743)

इस सरिय्या का विवरण:

अबू सुफ़ियान ने कुरैश के कुछ लोगों से कहा, "क्या तुममें से कोई ऐसा है जो मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अचानक क़त्ल कर सके, जब वह बाज़ारों में घूम रहे हों?"

इस पर, एक बंजारानुमा व्यक्ति अबू सुफ़ियान के पास आया और बोला, "मैं सबसे अधिक मज़बूत दिल वाला हूँ, मेरी पकड़ सबसे सख्त है और मैं सबसे तेज़ दौड़ सकता हूँ। अगर तुम मेरी मदद करो, तो मैं उनके पास जाऊँगा और अचानक उन पर हमला कर दूँगा। मेरे पास एक खंजर है जो गिद्ध के पर की तरह तेज़ है। इससे मैं मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर वार करूँगा, फिर किसी क़ाफ़िले में मिलकर निकल जाऊँगा, क्योंकि मैं रास्तों का बहुत अच्छा जानकार हूँ।"

अबू सुफ़ियान ने कहा, "तू ही हमारा साथी है।" फिर उसने उसे एक ऊँट और ज़रूरी सामान दिया और कहा, "अपने मिशन को गुप्त रखना।"

इसके बाद वह व्यक्ति रात के अंधेरे में निकला और पाँच दिनों तक चलता रहा। छठे दिन, वह मदीना के पास 'हर्रा' क्षेत्र में पहुँचा। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जब उसे देखा, तो फ़रमाया:

"यक़ीनन, इस व्यक्ति का इरादा धोखा देने का है, मगर अल्लाह इसके और इसके इरादे के बीच में आ जाएगा।"

इसलिए वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमला करने के लिए चला तो उसैद बिन हुदैर ने उसको उसकी चादर के अंदर वाले किनारे से पकड़कर खींचा, तो अचानक उसके हाथ से खंजर गिर पड़ा और वह पुकारने लगा, "मेरा खून! मेरा खून!" यानी "मेरी जान बख़्श दो!" उसे पकड़ लिया गया। हज़रत उसैद ने उसे गर्दन से पकड़ा फिर उसे छोड़ दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया, "मुझे सच-सच बताओ कि तुम कौन हो?"

उसने कहा, "मैं अमान चाहता हूँ।"

तो आपने फ़रमाया, "हाँ, ठीक है।"

उसने अपना काम और जो कुछ अबू सुफ़ियान ने उसके लिए मुकर्रर किया था, वह बताया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे छोड़ दिया और इस शफ़क़त पर वह मुसलमान हो गया और कहने लगा:

"ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं लोगों से नहीं डरता था, लेकिन जब मैंने आपको देखा तो मेरी अक़ल चली गई और मेरा दिल कमज़ोर हो गया। फिर मैं अपने उस इरादे से आगाह हुआ, जो मेरा अज़म था, जिसके बारे में कई सवार कोशिश कर चुके थे, मगर कोई कामयाब न हुआ। मैंने जान लिया कि आपकी हिफ़ाज़त की गई है और यक़ीनन आप हक़ पर हैं, यानी अल्लाह तआला आपकी हिफ़ाज़त करता है।

और अबू सुफ़ियान का लश्कर शैतान का लश्कर है।"

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कराने लगे। फिर वह आदमी कुछ दिन ठहरने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इजाज़त लेकर चला गया। इसके बाद उस आदमी का कोई ज़िक्र नहीं सुना गया। तारीख़ में बाद में उसका ज़िक्र नहीं आता।

(सुबुल अल-हुदा वाल-रशाद, जिल्द 6, पृष्ठ 123, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(उद्धृत फ़रहंग-ए-सिरत, पृष्ठ 102-101, ज़वार अकैडमी, कराची)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'अम्र बिन उमय्याह और सलमा बिन असलम को अबू सुफ़ियान बिन हरब की तरफ़ भेजा और फ़रमाया, "अगर तुम दोनों उसे ग़ाफलत की हालत में पाओ तो उसे क़त्ल कर देना।

वह यह इरादे कर रहा है तो फिर ठीक है, उसका इलाज भी यही है कि उसे ख़त्म कर दिया जाए ताकि यह झगड़ा ख़त्म हो।"

इब्र हिशाम ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 'अम्र बिन उमय्याह के साथ जब्बार बिन सख़र अंसारी को भी भेजा था।

(इब्र हिशाम, पृष्ठ 885, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(तबक्रातुल कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 72, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

यह दोनों वहाँ से चले, यहाँ तक कि मक्का के करीब पहुँच गए और उन्होंने अपने ऊँटों को या'जज की घाटियों में से एक घाटी में छुपा दिया, जो मक्का से आठ मील के फ़ासले पर थी। फिर रात को मक्का में दाख़िल हुए।

जब्बार या सलमा ने 'अम्र से कहा, "काश कि हम बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लेते और दो रकअत नमाज़ पढ़ लेते।"

'अम्र ने कहा, "ये लोग जब रात का खाना खा लेते हैं तो अपने सहनों में बैठ जाते हैं। अगर वे मुझे देखेंगे तो पहचान लेंगे। मैं मक्का में सफ़ेद और काले घोड़े से भी ज़्यादा मशहूर हूँ, यानी मुझे बहुत लोग जानते हैं। इनको मेरी पहचान है।"

'अम्र के साथी ने कहा, "हरगिज़ नहीं, इंशा अल्लाह हम जाएँगे।"

'अम्र ने बयान किया कि उसने मेरी बात मानने से इनकार कर दिया, तो फिर हमने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और नमाज़ पढ़ी। फिर हम अबू सुफ़ियान का इरादा करके निकले, जिस मक़सद के लिए आए थे, उसे पूरा करने के लिए।

कहते हैं कि अल्लाह की क़सम, हम मक्का में चल रहे थे कि अचानक मक्का वालों में से एक आदमी ने मुझे देखकर पहचान लिया।

इब्र साद ने बयान किया है कि वह मुआविया बिन अबू सुफ़ियान था, जिसने पहचाना था। तो मुआविया ने कहा, "अल्लाह की क़सम, 'अम्र बिन उमय्याह किसी शर के लिए ही आया है।"

उसने कुरैश को बता दिया। इसलिए वे 'अम्र से ख़ौफ़ज़दा हो गए। कुरैश को जब पता चला तो वे ख़ौफ़ज़दा हुए और तलाश करने के लिए निकल पड़े।

'अम्र कहते हैं कि मैंने अपने साथी से कहा, "जल्दी भाग चलो।"

इसलिए हम निकलकर तेज़ी से दौड़ने लगे, यहाँ तक कि हम एक पहाड़ पर चढ़ गए और वे हमारी तलाश में निकल पड़े। हम पहाड़ पर चढ़ गए थे, वे हमसे मायूस हो गए।

फिर हम वापस आए और पहाड़ की एक ग़ार में दाख़िल हो गए। हमने उसमें रात गुज़ारी और हमने पत्थर लिए और अपने आसपास तरतीब से जोड़ लिए।

जब सुबह हुई तो हमारे पास कुरैश का एक आदमी आया। वहाँ देखा कि कुरैश का एक आदमी फिर रहा था।

इब्र साद के नज़दीक वह उबैदुल्लाह बिन मालिक बिन उबैदुल्लाह तैमि था, लेकिन इब्र इस्हाक़ के नज़दीक वह उस्मान बिन मालिक या अब्दुल्लाह था।

बहरहाल, कहते हैं कि वह अपने घोड़े को हांक रहा था। वह हमारे पास ग़ार के इर्द-गिर्द था और हम ग़ार में थे।

इसलिए मैंने कहा, "अगर इसने हमें देख लिया तो यह चीख़ पड़ेगा और हम पकड़े जाएँगे और क़त्ल कर दिए जाएँगे," यानी वह काफ़िरों को बुला लेगा।

कहते हैं, "मेरे पास खंजर था, जो मैंने अबू सुफ़ियान के लिए तैयार कर रखा था।"

"मैंने निकलकर उसके सीने पर एक वार किया। वह चीखा तो अहल-ए-मक्का ने उसकी आवाज़ सुन ली। मैं वापस लौट आया और ग़ार में दाख़िल हो गया और लोग उसके पास तेज़ी से दौड़ते हुए आए।

वह ज़िंदगी के आख़िरी लमहात में था। इसलिए उन्होंने उससे पूछा, 'तुझे किसने मारा?'

तो उसने कहा, 'अम्र बिन उमय्याह ने।'

इस पर मौत ग़ालिब आ गई और वह वहीं मर गया और हमारी जगह न बता सका।"

एक रीवायत में है कि जब उन्होंने उसे पाया, तो उसमें इतनी ताकत नहीं थी कि मक्का वालों को हमारी जगह बता सके। अम्र बिन उमय्याह बयान करते हैं कि मैंने अपने साथी से कहा कि तू अपनी जान बचाकर भाग जा। अब तुम अपने ऊँट के पास जाओ और उस पर बैठकर चले जाओ। चूँकि वह चला गया, अम्र बिन उमय्याह कहते हैं कि फिर उसके बाद मैं चला, यहाँ तक कि ज़जनान पहुँच गया। ज़जनान मक्का से एक बरीद (यानी बारह मील) की दूरी पर एक पहाड़ था। कहते हैं कि फिर मैंने एक पहाड़ की तरफ़ पनाह ली और एक गुफा में दाख़िल हो गया। अम्र कहते हैं कि फिर मैं वहाँ से निकला और अरज में आ गया। अरज भी मक्का और मदीना के बीच एक घाटी थी, जहाँ काफ़िले ठहरते थे। फिर मैं सवारी पर सवार होकर चला, यहाँ तक कि जब मैं नक़ीअ में पहुँचा नक़ीअ मदीना से दो रातों की दूरी पर एक जगह थी। इब्र-हिशाम की सीरत में यह फासला लिखा हुआ है।

तभी कुरैश के दो मुशरिक मदीना की तरफ़ आ रहे थे, जिन्हें कुरैश ने जासूस बनाकर भेजा था कि वे देखें और हालात का पता लगाएँ। मैंने उन दोनों से कहा कि तुम अपने आपको मेरे हवाले कर दो। उन्होंने इनकार कर दिया। मैंने उनमें से एक को तीर मारकर क़त्ल कर दिया और दूसरा अपने आपको मेरे हवाले कर दिया। मैं उसे बाँधकर मदीना ले आया। उसने सीधे ही समर्पण नहीं किया, बल्कि दोनों के बीच जंग हुई थी, तीर चलाए गए थे।

बहरहाल, अम्र बिन उमय्याह ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अपने हालात सुनाने शुरू किए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हँस रहे थे।

फिर आपने अम्र बिन उमय्याह के लिए भलाई की दुआ की।

(स्रोत: सबुल हुदा, भाग 6, पृष्ठ 125-123, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

(फ़रहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 56, 198, 319, ज़वार अकैडमी, कराची) (ज़रकानी, भाग 3, पृष्ठ 228, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत) (अस-सीरतु-नबविय्या, इब्र हिशाम, पृष्ठ 886, हाशिया, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

इस सरीया के साल के बारे में अलग-अलग रीवायतें मिलती हैं। इब्र-हिशाम, इब्र-कसीर और तबरी आदि ने इसे 4 हिजरी का बताया है और इस सिलसिले में हज़रत खुबैब बिन अदी की लाश को लकड़ी से उतारने का ज़िक्र किया है। हज़रत खुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो वाक़िया-ए-रजीअ में क़ैद होकर मक्का में बेचे गए थे और कुरैश ने उन्हें लकड़ी पर बाँधकर शहीद कर दिया था। लेकिन इब्र-सअद ने अम्र बिन उमय्याह के इस सरीया के तहत लाश को उतारने का ज़िक्र नहीं किया।

इब्र-सअद की रीवायत इस बारे में ज़्यादा बेहतर लगती है, क्योंकि हज़रत खुबैब रज़ियल्लाहु अन्हो की लाश उतारने के लिए एक अलग पार्टी भेजे जाने का ज़िक्र मिलता है। ज़रकानी ने भी यही रुख़ अपनाया है और अम्र बिन उमय्याह के सरीया के आख़िर में लिखा है कि हज़रत खुबैब बिन अदी की लाश को उतारने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जुबैर और मिक़दाद को भेजा था।

(स्रोत: ज़रकानी, भाग 3, पृष्ठ 169, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बैरुत)

इस बारे में सीरत-ए-खातम-उन-नबीयीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी लिखा है कि अम्र बिन उमय्याह के इस सरीया में हज़रत खुबैब बिन अदी की लाश को लकड़ी से उतारने का कोई ज़िक्र नहीं किया।

इसकी तफ़सील इस तरह लिखी गई है:

"ग़ज़वा-ए-अहज़ाब की ज़िल्लत भरी नाकामी ने कुरैश-ए-मक्का के तन-बदन में आग लगा दी थी। यह आंतरिक गुस्सा अबू-सुफ़ियान के हिस्से में ज़्यादा आया था, जो मक्का का सरदार था और अहज़ाब की जंग में बुरी तरह शिकस्त खा चुका था। कुछ वक़्त तक अबू-सुफ़ियान इस आग में जलता रहा, मगर आख़िरकार यह आग उसकी बर्दाश्त से बाहर हो गई और उसने बदला लेने की ठानी।

कुरैश का सबसे बड़ा दुश्मन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। इसीलिए अबू-सुफ़ियान यह सोचने लगा कि जब सामने से लड़ाई में कुछ हासिल नहीं हुआ, तो किसी गुप्त योजना से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल कर दिया जाए।

वह जानता था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कोई विशेष सुरक्षा नहीं होती। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर अकेले ही मदीना की गलियों में घूमते, मस्जिद में पाँचों वक़्त की नमाज़ के लिए आते और सफ़र में भी बिना किसी ख़ास सुरक्षा के जाते। यह किसी हत्यारे के लिए सुनहरा मौक़ा था।

जब अबू-सुफ़ियान ने इस योजना को पक्का कर लिया, तो उसने कुछ कुरैशी नौजवानों से कहा, "क्या तुममें से कोई ऐसा बहादुर नहीं, जो मदीना जाकर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़त्ल कर सके? वह खुले आम घूमते हैं।"

इन नौजवानों ने यह सुना और इस योजना को अपनाने के लिए तैयार हो गए।

कुछ दिन बाद, एक बदवी नौजवान अबू-सुफ़ियान के पास आया और बोला: "मैंने

EDITOR SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.akhbarbadr.in	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	MANAGER : SHAIKH MUJAHID AHMAD Mobile : +91-9915379255 e-mail:managerbadrqnd@gmail.com www.alislam.org/badr
	Weekly BADAR Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 27 February 2025 Issue No. 09	

आपकी योजना सुनी है, और मैं इस काम के लिए तैयार हूँ। मैं मज़बूत इरादे वाला और तेज़ हमला करने वाला हूँ। अगर आप मेरी मदद करें, तो मैं मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़ल्ल करने के लिए तैयार हूँ। मेरे पास एक ऐसा खंजर है, जो बाज़ के छुपे हुए पंजों की तरह रहेगा। मैं अचानक हमला करूँगा और फिर भाग जाऊँगा। कोई मुझे पकड़ नहीं सकेगा।"

अबू-सुफ़ियान ने उसे एक तेज़ ऊँटनी और ज़रूरी सामान देकर रवाना किया और ताकीद की कि यह राज़ किसी को पता न चले।

यह व्यक्ति मक्का से रवाना होकर दिन में छुपता और रात में सफर करता हुआ मदीना की ओर रवाना हुआ और छठे दिन मदीना पहुँचा। वहाँ पहुँचकर जब उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पता लिया, तो वह सीधे बनी अब्दुल अशहल की मस्जिद में पहुँचा, जहाँ उस वक्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ ले गए थे। चूँकि उन दिनों नए लोग मदीना में आते रहते थे, इसलिए किसी मुसलमान को उस पर शक नहीं हुआ। लेकिन जैसे ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अपनी ओर आते देखा, तो आपने फ़रमाया, "यह व्यक्ति किसी बुरी नीयत से आया है।" यह सुनकर वह और तेजी से आपकी ओर बढ़ा, लेकिन एक अंसारी सरदार उसायद बिन हुज़ैर ने तुरंत लपककर उसे पकड़ लिया। इस संघर्ष के दौरान उनका हाथ उस व्यक्ति के छिपे हुए खंजर पर पड़ गया, जिससे वह घबरा गया और चिल्लाने लगा, "मेरा खून, मेरा खून!"

यहाँ अधिक विस्तार से लिखा गया है कि केवल चादर नहीं खींची गई थी, बल्कि बाकायदा उसे पकड़ने की कोशिश की गई थी, जिससे उसका खंजर हाथ से गिर गया। बहरहाल, उसने ऊँची आवाज़ में कहा, "मुझे माफ़ कर दो।" जब उसे पूरी तरह काबू में कर लिया गया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे पूछा, "सच-सच बताओ, तुम कौन हो और किस इरादे से आए हो?" उसने कहा, "अगर मेरी जान बख़्शी जाए, तो मैं सब कुछ बता दूँगा।" फिर उसने जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, पूरी कहानी बयान कर दी। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "ठीक है, तुम्हें माफ़ कर दिया जाएगा।" उसने यह भी बताया कि अबू सुफ़ियान ने उसे इस काम के लिए इतना बड़ा इनाम देने का वादा किया था। इसके बाद वह कुछ दिन मदीना में रहा और फिर अपनी खुशी से इस्लाम कबूल कर लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुयायियों में शामिल हो गया।

अबू सुफ़ियान की इस खूनी साजिश ने यह और भी ज़रूरी कर दिया कि मक्का वालों की मंशा और इरादों से पूरी तरह से अवगत रहा जाए। इसलिए, आपने अपने दो साथियों, अम्र बिन उमय्या ज़मरी और सलमा बिन असलम को मक्का की ओर रवाना किया और अबू सुफ़ियान की इस साजिश और उसकी पूर्व में की गई हिंसक कार्रवाईयों को देखते हुए उन्हें इजाज़त दी कि यदि उन्हें मौका मिले, तो इस्लाम के इस शत्रु का अंत कर दें। लेकिन जब उमय्या और उनका साथी मक्का पहुँचे, तो कुरैश सतर्क हो गए, और ये दोनों साथी अपनी जान बचाकर मदीना की ओर वापस लौट आए।

रास्ते में उन्हें कुरैश के दो जासूस मिले, जिन्हें कुरैश के सरदारों ने मुसलमानों की गतिविधियों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हालात का पता लगाने के

लिए भेजा था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यह भी कुरैश की किसी और खूनी साजिश का हिस्सा हो। लेकिन अल्लाह का करम हुआ कि उमय्या और सलमा को उनकी जासूसी का पता चल गया। उन्होंने उन जासूसों पर हमला करके उन्हें पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने प्रतिरोध किया। इस संघर्ष में एक जासूस मारा गया और दूसरे को कैद कर वे अपने साथ मदीना ले आए।

(सिरत-ए-खातिमुन्नबियीन, हज़रत साहबज़ाद मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 743-741)

बाकी, इंशाअल्लाह आगे जारी रहेगा। पाकिस्तान के हालात के लिए मैं दुआ की अपील करता हूँ।

अब तो वहाँ कभी-कभी हालात बहुत ज्यादा गंभीर हो जाते हैं और ऐसा लगता है कि प्रशासन और सरकार भी कट्टरपंथी मौलवियों के हाथों का खिलौना बन गई है। पहले खबरें आती थीं कि किसी मस्जिद का मीनार गिरा दिया या मेहराब तोड़ दी, और उन्हें इस पर ऐतराज़ था। लेकिन अब, डसका में कल, सड़क बनाने के बहाने पहले नोटिस भेजा गया कि इतनी जगह ली जाएगी और फिर वहाँ बुलडोज़र चला दिया जाएगा, जिससे मस्जिद का एक छोटा सा हिस्सा, जैसे वज़ूखाना आदि प्रभावित होंगे।

लेकिन जब वे बुलडोज़र लेकर आए, तो मौलवियों के कहने पर पूरी मस्जिद को ही गिरा दिया और शहीद कर दिया।

यह मस्जिद बहुत पुरानी थी, यह विभाजन (पार्टिशन) से पहले की बनी हुई थी, और शायद हज़रत चौधरी जफरुल्लाह खान साहिब ने इसे बनवाया था। बहरहाल, आजकल ये लोग इस हद तक बढ़ गए हैं कि केवल अल्लाह ही है जो इनकी जल्द सज़ा का इंतज़ाम करे और इनके षड्यंत्र इन्हीं पर पलट दे।

इसलिए, खासतौर पर पाकिस्तान के अहमदियों को बहुत ज्यादा दुआओं की ज़रूरत है। इस ओर ध्यान दें।

इसी तरफ़ फिलिस्तीन के बारे में जो समझौता हो रहा है, कभी कहा जाता है कि हो गया, तो कभी कहा जाता है कि नहीं हुआ। समझौते के बावजूद घटनाएं हो रही हैं। इस पर कुछ लोग बिना वजह अत्यधिक खुशी का इज़हार करने लगे हैं, लेकिन उन्हें समझना चाहिए कि

दुज्जाली ताकतों पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। वे कहते कुछ हैं और करते कुछ और हैं।

इसलिए बहुत अधिक खुशफहमी की ज़रूरत नहीं है।

फिलिस्तीन के लिए भी दुआओं की ज़रूरत है, और मुसलमानों को भी समझदारी से काम लेते हुए अपने अधिकारों को पाने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम को भी अक्ल दे।

अब मैं कुछ दिवंगत व्यक्तियों का ज़िक्र करूँगा और बाद में जनाज़ा-ए-गायब पढ़ाऊँगा। सबसे पहले ज़िक्र है श्रीमान शेख़ मुबारक अहमद साहिब का। वे रबwah में सदर अंजुमन अहमदिया के नाज़िर दीवान थे

शेष आगे ..

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web: www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टेस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.



चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
 और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
 फ़ोन नंबर :- +91-9646561639, +91-8557901648